हिंदी

कक्षा X

केरल सरकार
सार्वजनिक शिक्षा विभाग
2019

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

NT-255-1-HINDI-10

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30

© Department of Education, Government of Kerala

प्यारे छात्रो,

हिंदी की दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में है। कहानी, कविता, उपन्यास-अंश, फ़िल्मी लेख, जीवनी, फ़िल्मी गीत, यात्रावृत्त, टिप्पणी आदि आपकी पसंद की विभिन्न विधाएँ इसमें हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) के मुताबिक कौशल विकास के अनुरूप गतिविधियाँ इसमें हैं। साथ ही आपदा प्रबंधन और जीवन कौशलों पर ध्यान दिया गया है। क्यू आर कोड (त्वरित प्रतिक्रिया संकेतावली) का प्रयोग भी पाठ्यपुस्तक में है। इसके साथ सूचना प्रौद्योगिकी का भरसक लाभ उठाएँ। आशा है, हिंदी भाषा और साहित्य पर अपना अधिकार पाने के साथ-साथ देश के सतर्क नागरिक के रूप में आपके विकास में भी यह मदद करेगी।

डॉ जे प्रसाद

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

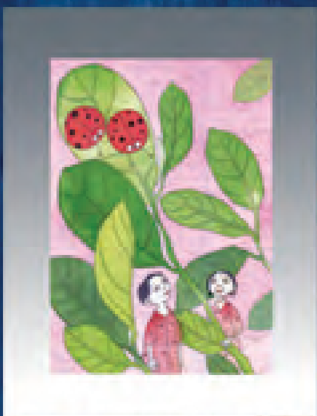

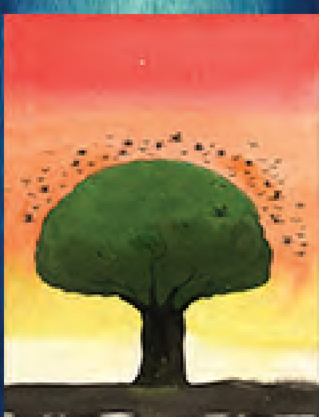

अनुक्रम

			पृष्ठसंख्या
इकाई - 1			7 - 30
बीरबहूटी	कहानी	प्रभात	8
हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था	टिप्पणी	नरेश सक्सेना	15
टूटा पहिया	कविता	धर्मवीर भारती	20
बंटी	उपन्यास (अंश)	मन्नू भंडारी	23
इकाई - 2			31 - 50
आई एम कलाम के बहाने	फ़िल्मी लेख	मिहिर	32
सबसे बड़ा शो मैन	जीवनी (अंश)	गीत चतुर्वेदी	40
नीली आसमानी छतरी	फिल्मी गीत	गुलज़ार	44
इकाई - 3			51 - 66
अकाल और उसके बाद	कविता	नागार्जुन	52
ठाकुर का कुआँ	कहानी	प्रेमचंद	55
एक थाल चाँद भरा	कहानी	अनंत गंगोला	61

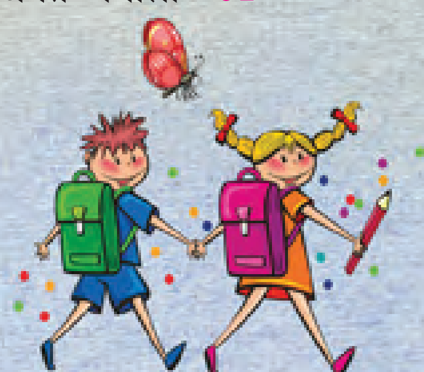

पृष्ठसंख्या

इकाई - 4 67 - 88

बसंत मेरे गाँव का	लेख	मुकेश नौटियाल	68
दिशाहीन दिशा	यात्रावृत्त	मोहन राकेश	74
जगहों के नाम	कविता	तेज़ी ग्रोवर	81

इकाई - 5 89 - 100

बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता	राजेश जोशी	90
गुठली तो पराई है	कहानी	कनक शशि	94
तुम लडकी हो तुम्हें क्यों पढ़ना है?	कविता	कमला भसीन	98

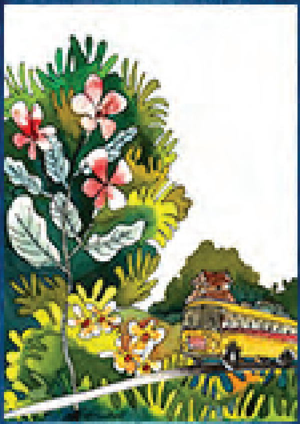

आप जानें...

भाषा का एक सहज रूप है। अतः भाषार्जन नैसर्गिक प्रक्रिया है। विभिन्न विधाओं के माध्यम से हम भाषा का आदान-प्रदान करते हैं।

दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक की पाँच इकाइयाँ हैं। हर अध्याय में प्रत्येक आशय पर केंद्रित होकर भिन्न व्यावहारिक विधाओं के सहारे भाषा के रूप दर्शाए गए हैं। प्रत्याशित अधिगम उपलब्धियों को पूर्ण रूप में अर्जित करने के लिए आपको ठीक-ठीक प्रक्रियाओं से गुज़रना है। प्रक्रियाओं से गुज़रते वक्त आशय के साथ-साथ भाषा तथ्यों का भी सही विश्लेषण अनिवार्य है। विश्लेषण की इस प्रक्रिया में भाषा पर अधिकार जमाने का पहला और अंतिम शर्त है- विचार विश्लेषण का माध्यम हिंदी ही हो। इन सारे लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए हम पाठ्यपुस्तक से गुजरेंगे ...।

इकाई 1

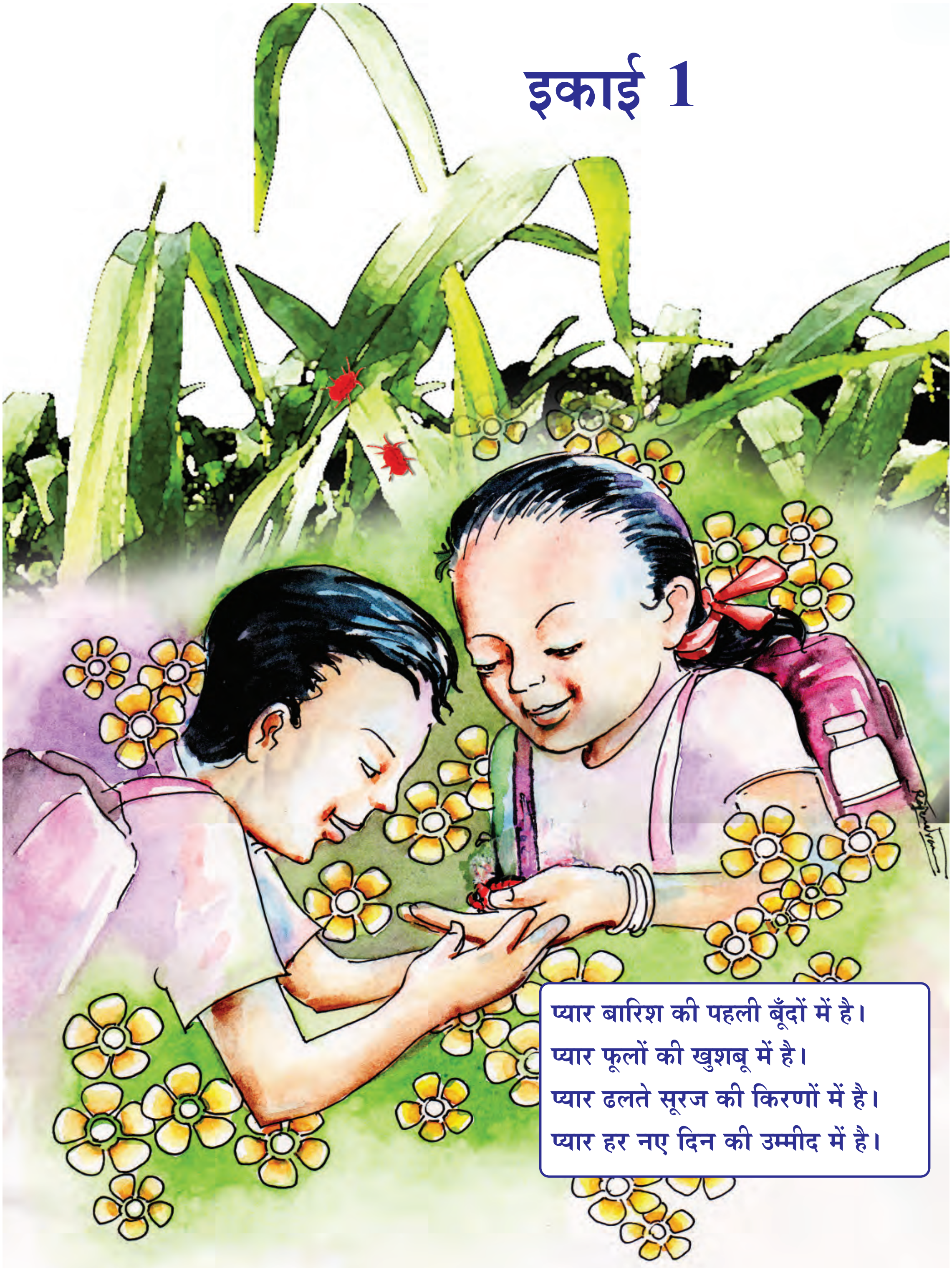

प्यार बारिश की पहली बूँदों में है।
प्यार फूलों की खुशबू में है।
प्यार ढलते सूरज की किरणों में है।
प्यार हर नए दिन की उम्मीद में है।

बीरबहूटी

प्रभात

4UQCGH

बादल बहुत बरस लिए थे। फिर भी बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था। वे खेतों, जंगलों के ऊपर छाए हुए थे। सारा आकाश मेघों से भरा था। मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं। पेड़ों के तने अभी भी गीले थे। मूँगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे। खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था। बाजरे के लंबे पतले पातों में पानी की बूँदें अटकी हुई थीं। बारिश की हवा में गीले खेतों और बारिश की हरियाली की गंध घुली हुई थी।

उन्हें बीरबहूटियों से मिलना होता था। सो वे स्कूल के लिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे। कस्बे से सटे इन खेतों में बीरबहूटियाँ खोजा करते थे। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें। उनके बस्ते उनकी पीठ पर लदे होते थे, कंधों पर टंगे होते थे। वे एक-दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बल्कि कहना चाहिए बिलकुल सटकर बीरबहूटियाँ खोजते थे। उन्हें देखने के लिए वे बारिश की गंध भरी भूरी ज़मीन पर बैठ जाया करते थे।

"बेला, देखो इस बीरबहूटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।" साहिल ने कहा।

"तुमने कुछ सुना बेला?"

"हाँ, सुना। पहली घंटी लग गई है।"

"लेकिन मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है, दुकान से।"

* * *

उन्नीस सौ इक्यासी का साल। राजस्थान में जयपुर के नज़दीक सवारी गाड़ियों और मालगाड़ियों से सदा भरा फुलेरा जंक्शन। कस्बे की लगभग सूनी तंग गलियाँ। गलियों में खामोश खड़े बिजली के खंभे। खंभों के बीच खिंची तारों की कतारें। इन गलियों में जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ते मीठी घंटियाँ बजाते फेरी वाले। एक अंधेरी-सी गली में छह-सात गधों की खुरों की टापों की आवाज़ें। उनके पीछे चलता एक बदन उघाड़े कुम्हार। इसी दृश्य के बीच से गुज़रते हुए दो स्कूली बच्चे - बेला और साहिल। उन दिनों पैन में पाँच पैसे में नीली स्याही भरी जाती थी। स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे।

* * *

पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिड़क दिया। नई स्याही भरवाने के लिए दोनों दुकान पर पहुँचे।

"एक पैन स्याही भर दो।" साहिल से पहले ही बेला ने दुकानवाले से कहा।

"बेटा स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है। अब तो कल ही मिल पाएगी।"

"लेकिन इसने तो पैन में जो स्याही थी उसे भी ज़मीन पर छिड़क दिया।" बेला बोली।

"बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए।" दुकानवाले भैया ने कहा और पूछा "कौन-सी में पढ़ते हो?"

'बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए।' दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?

"पाँचवीं में।" साहिल ने ऐसे बुरे मन से बताया जैसे पाँचवीं में पढ़ना पाप हो।

"दोनों?" दुकानवाले भैया ने कहा।

"हाँ दोनों, और हम दोनों का सैक्शन भी एक ही है - ए।" बेला ने ऐसे खुश होकर बताया जैसे यह कोई बहुत बड़ी बात हो।

क्लास में दोनों पास-पास बैठते थे। कॉपी में काम करते तो दोनों कॉपी में काम करते थे। किताब पढ़ते तो दोनों किताब पढ़ते। बल्कि पाठ भी एक ही पढ़ते। साहिल "चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी" पढ़ता तो बेला भी "चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी" पढ़ती थी।

बेला कहती, "बहन जी पानी पीने चली जाऊँ?"

साहिल भी कहता, "बहन जी पानी पीने चला जाऊँ?"

गणित के माटसाब सुरेंदर जी का पीरियड खेल घंटी के बाद आता था। बच्चे उनसे काँपते थे और खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही अपनी-अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे।

सुरेंदर जी माटसाब इसी पीरियड में कॉपी जाँचते थे। ज़रा-सी गलती पर बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे या झापड़ मारने लगते थे। उनका हाथ चलना शुरू होता तो रुकना भूल जाता था।

एक दिन सुरेंदर जी माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया। पर शायद जिस गलती को पाकर वे उसके बाल पकड़कर फेंकनेवाले थे, वह गलती थी ही नहीं। उन्होंने बेला को छोड़ दिया। बेला के भयभीत चेहरे को देखकर साहिल बुरी तरह डर गया था। उसने देखा कि बेला के पाँव अभी भी काँप रहे हैं। जैसे वह खड़े-खड़े अभी गिर जाएगी। सुरेंदर जी माटसाब ने कॉपी को उसके बैठने की जगह पर फेंकते हुए कहा, "बैठ अपनी जगह पर।"

बेला का मन बहुत खराब हो गया, माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं। वह साहिल के सामने खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह साहिल की नज़र में बहुत अच्छी है। जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।

'जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।' क्यों?

दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफ़ेद पट्टी बँधी थी। कोई उसे " होए हेए होए सफ़ेद पट्टी" कह रहा था तो कोई "सुल्ताना डाकू" तो कोई कुछ और कहकर चिढ़ा रहा था।

"ये क्या हो गया बेला" साहिल ने परेशान होते हुए पूछा।

"छत से गिर गई" बेला ने हँसते हुए कहा और कहा, "बहुत दिन हो गए, आज खेल घंटी में गांधी चौक में लंगड़ी टाँग खेलेंगे।"

"नहीं खेलेंगे। तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो...?"

"नहीं लगेगी" बेला ने ज़िद की। और वे हमेशा की तरह सारे बच्चों के साथ गांधी चौक की बालू में पूरी खेल घंटी लंगड़ी टाँग खेले। इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गांधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पड़ती जैसे और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो।

"इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गांधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पड़ती जैसे और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो।" इसका मतलब क्या है?

रविवार का दिन था। साहिल अपने घर में नीम के पेड़ की डाली पकड़कर झूम रहा था। वह एक स्टूल पर चढ़कर झूलता था। अचानक टूटे स्टूल की एक कील साहिल की पिंडली में लग गई। एक इंच गहरा गड्ढा हो गया।

उसे सरकारी अस्पताल में पट्टी बंधवाने के लिए ले जाया गया। उसने देखा कि दो लोगों को छोड़कर आगे बेला खड़ी है। सिर में पट्टी बंधवाने आई है। स्कूल आते-जाते हुए और कक्षा में कई दिनों तक दो ऐसे बच्चे दिखाई देते

रहे जिनमें से एक के सिर पर पट्टी बंधी होती और एक की पिंडली में। सफ़ेद पट्टी वाले ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते।

पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया। दोनों छठी में आ गए। यह स्कूल पाँचवीं तक ही था।

"साहिल अब तुम कहाँ पढ़ोगे?" बेला ने पूछा।

"और तुम कहाँ पढ़ोगी बेला?" साहिल ने पूछा।

"मेरे पापा कह रहे थे कि तुझे राजकीय कन्या पाठशाला में पढ़ाएँगे और तुम?"

"मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक हॉस्टल है, घर से दूर वहाँ अकेला रहूँगा।"

"क्यों साहिल?"

"पता नहीं क्यों"

"तो यानी कि अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे?"

"नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना।"

साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था और बेला साहिल का। आज आखिरी बारी वे एक-दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे।

"तुम्हारी आँख में आँसू क्यों आ रहे हैं बेला?"

"मुझे क्या पता।" बेला ने डबडबाई आँखों से हँसते हुए कहा।

साहिल की आँखें बीरबहूटी की तरह लाल होने लगी थीं और उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था। बेला कहने लगी, "मैं चिढ़ाऊँ अब तुम्हें? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल।"

बारिशें आने में डेढ़ महीना बाकी था। लेकिन यह बारिशों से पहले की बारिश का एक दिन था। आसमान में घटाएँ घिरी थीं। धूल भरी तेज़ हवाएँ चल रही थीं। पानी बरस रहा था। फुलेरा कस्बे की बादल छाई एक गली में पाँचवीं से छठी में चली गई एक लड़की जा रही थी। उसके भूरे बाल बीरबहूटियों के रंग के लाल रिबन से बंधे थे। दूसरी दिशा को जाती एक गली में पाँचवीं से छठी में गया एक ग्यारह साल का लड़का जा रहा था। इसकी पिंडली में बीरबहूटी के रंग का-सा एक इंच लंबा चोट का निशान था।

'यह बारिशों से पहले की बारिश का एक दिन था।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है?

मिलान करें।

साहिल की आँखें	चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें
चलती बीरबहूटियाँ	बीरबहूटी की तरह लाल
साहिल के आँसू	बीरबहूटी का रंग
साहिल की चोट	बारिश की बूँदें

प्रत्येक की तुलना किसके साथ की गई है? लिखें।

- साहिल की लाल आँखों की तुलना बीरबहूटी से की गई है।
-
-
-
-

- कहानी की घटनाओं को सूचीबद्ध करें।

    - गीली ज़मीन पर बेला और साहिल का बीरबहूटियों को खोजना।
    - पैन में स्याही भरना।
    -
    -
    -
    -

- घटनाओं के आधार पर पटकथा तैयार करें।

4UZ8IJ

परखें,

आपकी रचना में

☞ स्थान और समय का उल्लेख है।

☞ पात्र, पात्रों की आयु, वेश-भूषा, चाल-चलन आदि का उल्लेख है।

☞ दृश्य का विवरण है।

☞ स्वाभाविक और पात्रानुकूल संवाद है।

- अपनी किसी दोस्ती की याद पर टिप्पणी लिखें।

NT-255-2-HINDI-10

■ **पढ़ें।**

ग्यारह साल <u>का</u> लड़का जा रहा था।

बेला <u>के</u> पाँव अभी भी काँप रहे हैं।

स्याही <u>की</u> बोतल अभी-अभी खाली हो गई है।

पानी <u>की</u> बूँदें अटकी हुई थीं।

वाक्यों में रेखांकित परसर्गों पर ध्यान दें। इनके अर्थ समान और रूप अलग-अलग हैं। क्यों? चर्चा करें।

■ **ऐसे परसर्गयुक्त वाक्य कहानी से चुनकर लिखें।**

-
-
-
-
-
-

प्रभात

युवा कवि प्रभात का जन्म राजस्थान के करौली में 1972 को हुआ। आप कवि होने के साथ-साथ कहानीकार भी हैं। कासीबाई,पानी की गाड़ियों में, झूसता रहा जाता रहा आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

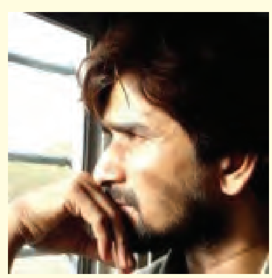

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

विनोद कुमार शुक्ल की कविता पर नरेश सक्सेना की टिप्पणी

नरेश सक्सेना

विनोद कुमार शुक्ल अपनी मौलिकता के साथ ही भाषा की अनगढ़ता के लिए विख्यात हैं। किंतु इस कविता में मौलिक होने के साथ ही वे काव्य शिल्प के सिद्ध कवि की तरह भी दिखाई देते हैं।

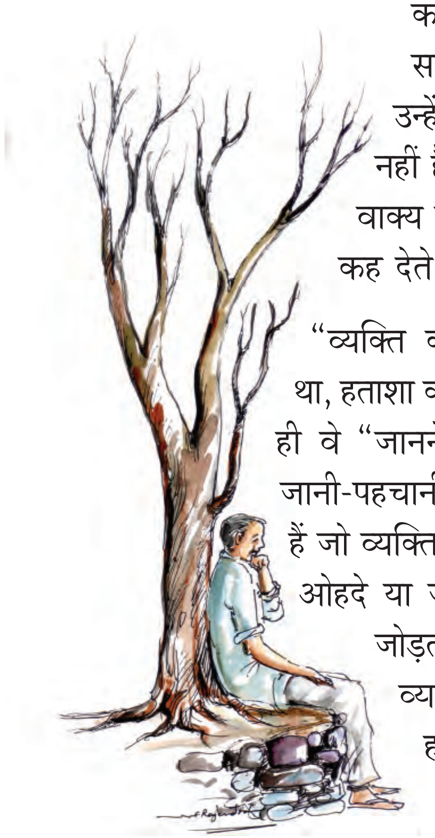

कविता के अर्थ इतने सहज और साफ़ हैं कि उन्हें व्याख्या की दरकार नहीं है। सरल शब्दोंवाले वाक्य स्वयं ही अपना मर्म कह देते हैं।

“व्यक्ति को मैं नहीं जानता था, हताशा को जानता था” कहते ही वे “जानने” की हमारी उस जानी-पहचानी रूढ़ि को तोड़ देते हैं जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोड़ती है। यदि हम किसी व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से नहीं जानते तो हम कुछ नहीं जानते। सड़क पर घायल पड़े अपरिचित व्यक्ति को देखकर क्या हम कह सकते हैं कि उसे हम नहीं जानते? वास्तव में

‘जानना’ शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं?

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैं ने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

विनोद कुमार शुक्ल

हम जानते हैं कि यह व्यक्ति मुसीबत में है और इसे हमारी मदद की ज़रूरत है। यह कविता मुनष्य को मनुष्य की तरह "जानने" की याद दिलाती है।

कविता लगातार "नहीं जानने" और "जानने" का बयान करती जाती है। शिल्प की इस बारीक कारीगरी को देखें -

"वह मुझे नहीं जानता था, हाथ बढ़ाने को जानता था" "हम एक-दूसरे को नहीं जानते थे, साथ-साथ चलना जानते थे" यह "नहीं जानना" और "जानना" कविता में किसी लोकगीत के स्थायी की तरह बार-बार लौटता है। गद्‌य में लिखी हुई किसी कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध इस खूबी के साथ हिंदी की किस कविता में आया है, याद नहीं आ रहा।

जैसे किसी गज़ल में आखरी शेर के आखरी शब्द, श्रोताओं की ज़ुबान पर आप से आप आ जाते हैं, वैसे ही इस कविता के अंतिम शब्द– यानी "साथ-साथ चलना" के बाद यदि कविता पाठ रोक दिया जाए तो सुनने वाले खुद वाक्य पूरा कर देंगे और कहेंगे "जानते थे"।

कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के निरीक्षण क्या-क्या हैं?

यह कविता 'जानना' शब्द के रूढ़िग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल देती है। इस कविता की पहली दो पंक्तियों में ही कवि अपनी पूरी बात कह देता है। शेष पंक्तियाँ उसी कहे गए को और सघन, और गहरा करती हैं। कविता का संदेश है कि – दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है – जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

किंतु यह संदेश कविता में उपदेश की तरह नहीं आता।

4V94K7

■ **टिप्पणी के आधार पर लिखें।**

'जानने' के रूढ़िग्रस्त आधार	'जानने' के असली आधार
• …………………………………	• …………………………………
• …………………………………	• …………………………………
• …………………………………	• …………………………………
• …………………………………	• …………………………………

■ **कविता पर टिप्पणी लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना है? नरेश सक्सेना की टिप्पणी के आधार पर लिखें।**

नरेश सक्सेना

जन्म : 16 जनवरी 1931

ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

नरेश सक्सेना समकालीन हिंदी साहित्यक्षेत्र के विलक्षण कवि हैं। संप्रति कविताओं के अतिरिक्त नाटक, फिल्म, संपादन के क्षेत्र में भी आप सक्रियता से महत्वपूर्ण कार्य करते रहते हैं। समुद्र पर हो रही है बारिश (कविता संग्रह), आदमी का आ (नाटक) आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। साहित्य के लिए आपको 2000 का पहल सम्मान मिला है तथा निर्देशन के लिए 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी।

विनोद कुमार शुक्ल

जन्मः 1 जनवरी 1937 (मध्यप्रदेश)

आप समकालीन हिंदी साहित्य क्षेत्र में कवि और कथाकार के रूप में विख्यात हैं। सब कुछ होना बचा रहेगा, वह आदमी चला गया, नया गरम कोट पहनकर विचार की तरह, लगभग जयहिंद आदि आपके काव्य संग्रह हैं। खिलेगा तो देखेंगे तथा दीवार में एक खिड़की रहती थी दोनों आपके उपन्यास हैं। मध्यप्रदेश शिखर सम्मान (1995), मैथिली शरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान (1996) आदि से आप सम्मानित हुए हैं।

यह समाचार पढ़ें और 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' कविता के आधार पर विष्णु कुमार के कार्य पर चर्चा करें।

केरल बाढ़ : मध्यप्रदेश के विष्णु ने कायम की मिसाल

भोपाल : केरल में लगभग 100 साल बाद आई बाढ़ से लाखों लोगों की ज़िंदगी पर अब भी संकट बना हुआ है। संकट की इस घड़ी में मध्य प्रदेश के एक व्यक्ति के समर्पण भाव ने बाढ़ पीड़ितों का दिल जीत लिया है। मध्य प्रदेश के नीमच ज़िले से आनेवाले विष्णु कुमार गली-गली कंबल और चादर बेचने का काम करता है। वह हर साल बारिश के मौसम पर केरल पहुँच जाता है। विष्णु बीबीसी को बताता है, "मैं हर साल यहाँ कंबल बेचने आता हूँ। लेकिन इस बार जब मैं यहाँ आया तो मुझसे उनकी हालत देखी नहीं गई। मैंने यहाँ देखा कि किसी का घर डूब गया, परिवार में कोई मर गया, किसी के पास ओढ़ने के लिए कुछ नहीं है। हर आदमी मुसीबत में है।" विष्णुकुमार ने करीब 50 कंबल स्थानीय ज़िलाधिकारी मोहम्मद अली को सौंपे ताकि वे बाढ़ पीड़ितों तक पहुँचा सकें।

4VHZLU

■ सोचें, यह चित्र आपसे क्या कह रहा है?

टूटा पहिया

धर्मवीर भारती

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत!
क्या जाने; कब
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए!
अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!

- **पढ़ें,**

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें।

-इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।

- **पढ़ें,**

तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!

-इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है?

- **पढ़ें,**

इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!

-इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं?

■ **कविता के प्रतीकों को चुनकर खंभे में लिखें। वर्तमान परिवेश में प्रतीक किसका प्रतिनिधित्व करता होगा? यह भी लिखें।**

प्रतीक	**किसका प्रतिनिधित्व करता है।**
◆	◆
◆	◆
◆	◆
◆	◆
◆	◆

■ **'टूटा पहिया' कविता पर टिप्पणी लिखें।**

धर्मवीर भारती

जन्म : 25 दिसंबर 1926, इलाहाबाद

निधन : 4 सितंबर 1997

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक।

प्रमुख कृतियाँ: मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग (कहानी संग्रह)

ठंडा लोहा, कनुप्रिया (काव्य) गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा (उपन्यास)

अंधायुग (काव्य नाटक)

पुरस्कार : पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी, भारत भारती, व्यास सम्मान

उपन्यास का अंश

बंटी

मन्नू भंडारी

ममी ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठी तैयार हो रही हैं। बंटी पीछे खड़ा चुपचाप देख रहा है। ममी जब भी कॉलेज जाने के लिए तैयार होती हैं, बंटी बड़े कौतूहल से देखता है। जान तो वह आज तक नहीं पाया, पर उसे हमेशा लगता है कि ड्रेसिंग टेबुल की इन रंग-बिरंगी शीशियों में, छोटी-बड़ी डिबियों में ज़रूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने के बाद एकदम बदल जाती हैं। कम से कम बंटी को ऐसा ही लगता है कि उसकी ममी अब उसकी नहीं रहीं, कोई और ही हो गई।

पूरी तरह तैयार होकर, हाथ में पर्स लेकर ममी ने कहा "देखो बेटे, धूप में बाहर नहीं निकलना, हाँ।" फिर फूफी को आदेश दिया। "बंटी जो खाए वही बनाना, एकदम बंटी की मर्जी का खाना, समझीं।"

चलने से पहले ममी ने उसका गाल थपथपाया। बालों में उँगलियाँ फँसाकर बड़े प्यार से बाल झिंझोड़ दिए। पर बंटी जैसे बुत बना खड़ा रहा। बाँह पकड़कर झूला नहीं, किसी चीज़ की फरमाइश नहीं की। ममी ने खींचकर उसे अपने पास सटा लिया। पर एकदम चिपककर भी बंटी को लगा जैसे ममी उससे बहुत दूर हैं। और फिर वे सचमुच ही दूर हो गईं। उनकी चप्पल की खटखट जब बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँची तो बंटी कमरे के दरवाज़े पर आकर खड़ा

हो गया। और ममी जब फाटक खोलकर, सड़क पार करके, घर के ठीक सामने बने कॉलेज में घुसीं तो बंटी दौड़कर अपने घर के फाटक पर खड़ा हो गया। सिर्फ़ दूर जाती हुई ममी को देखने के लिए। वह जानता है, ममी अब पीछे मुड़कर नहीं देखेंगी। नपे-तुले क़दम रखती हुई सीधी चलती चली जाएँगी। जैसे ही अपने कमरे के सामने पहुँचेंगी चपरासी सलाम ठोंकता हुआ दौड़ेगा और चिक उठाएगा। ममी अंदर घुसेंगी और एक बड़ी-सी मेज़ के पीछे रखी कुर्सी पर बैठ जाएँगी। मेज़ पर ढेर सारी चिट्ठियाँ होंगी। फाइलें होंगी। उस समय तक ममी एकदम बदल चुकी होंगी। कम से कम बंटी को उस कुर्सी पर बैठी ममी कभी अच्छी नहीं लगीं।

पहले जब कभी उसकी छुट्टी होती और ममी की नहीं होती, ममी उसे भी अपने साथ कॉलेज ले जाया करती थीं। चपरासी उसे देखते ही गोद में उठाने लगता तो वह हाथ झटक देता। ममी के कमरे के एक कोने में ही उसके लिए एक छोटी-सी मेज़-कुर्सी लगवा दी जाती, जिसपर बैठकर वह ड्राइंग बनाया करता। कमरे में कोई भी घुसता तो एक बार हँसी लपेटकर, आँखों ही आँखों में ज़रूर उसे दुलरा देता। तब वह ममी की ओर देखता। पर उस कुर्सी पर बैठकर ममी का चेहरा अजीब तरह से सख़्त हो जाया करता है। लगता है, मानो अपने असली चेहरे पर कोई दूसरा चेहरा लगा लिया हो। ममी के पास ज़रूर एक और चेहरा है। चेहरा ही नहीं, आवाज़ भी कैसी सख़्त हो जाती है! बोलती हैं तो लगता हैं जैसे डाँट रही हों। बंटी को ममी बहुत ही कम डाँटती हैं। बस, प्यार करती हैं इसीलिए यों सख़्त चेहरा डाँटती, प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठी ममी उसे कभी अच्छी नहीं लगतीं।

वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीज़ें आ जाती हैं। ममी का नकली चेहरा, कॉलेज, कॉलेज की बड़ी-सी बिल्डिंग, कॉलेज की ढेर सारी लड़कियाँ, कॉलेज के ढेर सारे काम! थोड़ी-थोड़ी देर में बजनेवाले घंटे, घंटा बजने पर होनेवाली हलचल... इन सबके एक सिरे पर वह रहता है चुपचाप, सहमा-सा और दूसरे पर ममी रहती हैं - किसी को आदेश देती हुई, किसी के साथ सलाह-मशवरा करती हुई, किसी को डाँटती हुई। और इसीलिए उसने कॉलेज जाना छोड़ दिया। घर में चाहे वह अकेला रहे, पर वहाँ नहीं जाता। वहाँ किसके पास जाए? ममी तो वहाँ रहती नहीं। रहती हैं बस एक प्रिंसिपल, जिनके चारों ओर बहुत सारे काम, बहुत सारे लोग रहते हैं। नहीं रहता है तो केवल बंटी।

"वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीज़ें आ जाती हैं। वह बंटी की अपनी दुनिया नहीं थी।..."

- **इस हालत में बंटी के विचार क्या-क्या हो सकते हैं? लिखें।**

मन्नू भंडारी

जन्म : 3 अप्रैल 1931 भानपुरा नगर (मध्यप्रदेश)

आप हिंदी की आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार हैं। माँ-बाप के विवाह-संबंध के टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केंद्रीय विषय बनाकर लिखे गए आपके उपन्यास 'आपका बंटी' को हिंदी के सफलतम उपन्यासों की श्रेणी में रखा जाता है। एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु (कहनी संग्रह) महाभोज, कलवा (उपन्यास) रजनीगंधा, निर्मला,दर्पण (फिल्म पटकथा) बिना दीवारों का घर, महाभोज (नाटक) एक कहानी यह भी (आत्मकथा) आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं। 2008 में आप व्यास सम्मान से पुरस्कृत हुईं।

मदद लें...

बीरबहूटी :
लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा;
ഇന്ദ്രഗോപം **red velvet mite**

बीरबहूटी

अटकना	-	रुकना
आखिर	-	अंत में
उगना	-	വളരുക to grow வளர்தல் ಮೊಳೆಯು
कतार	-	पंक्ति; श्रेणी
कस्बा	-	छोटा शहर
कील	-	ആണി nail ஆணி ಆಣಿ
खामोश	-	मौन
खुर	-	चौपायों के पैर का निचला भाग जो बीच से फटा होता है।
गड्ढा	-	കുഴി a pit குழி ಹೊಂಡ
गदबदी	-	मुलायम
घुलना	-	किसी द्रव पदार्थ में भली-भांति मिल जाना
चिढ़ाना	-	खिझाना
छत	-	घर का छाजन
छिड़कना	-	पानी के छींटे डालना തളിക്കുക to sprinkle தளித்தல்
झापड़ मारना	-	उँगलियों से गाल पर मारना
झूमना	-	लहराना
टाप	-	चौपायों के पैर का वह भाग जो भूमि पर पड़ता है।
डेढ़	-	ഒന്നര one and half ஒன்றரை ಒಂದುವರೆ
तंग गली	-	संकरी गली

नज़दीक	-	पास, निकट
नीम	-	വേപ്പുമരം margosa tree வேப்பமரம் ಬೇವಿನ ಮರ
पात	-	पत्ता
पिंडली	-	घुटने के पीछे का निचला मांसल भाग
फुसफसाना	-	मंद स्वर में कहना
फेरीवाला	-	किसी वस्तु को लादकर गली-गली में घूमकर बेचनेवाला
बदन उघाड़े कुम्हार	-	अर्ध नग्न शरीरवाले कुम्हार
बस्ता	-	थैला
बाजरा	-	अन्न का एक पौधा एवं उसका दाना
बेडौल	-	कुरूप
मूँगफली	-	നിലക്കടല ground nut நிலக்கடலை ನೆಲಕಡಲೆ
विराट	-	विशाल
शरम	-	लज्जा
शर्मिंदा	-	लज्जित
सरीखा	-	समान
सुर्ख	-	रक्त वर्ण
सूना	-	शून्य

सुलताना डाकू :

'सुलताना' एक बहादुर डाकू था जिसे पकड़ना नामुमकिन था। अंग्रेज़ पुलिस ने उसे पकड़ने की लगातार कोशिश की। सुलताना डाकू का अपना एक इतिहास है। उसपर एक फ़िल्म भी बनाई गई जिसमें धारा सिंह ने सुलताना डाकू का किरदार निभाया था। इस पात्र के सर पर हमेशा एक पगड़ी बंधी रहती थी।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

अनगढ़ता	-	स्वाभाविकता
अहसास	-	अनुभव
ओहदा	-	പദവി position பதவி ಪದವಿ
कारीगर	-	शिल्पी
कारीगरी	-	शिल्पविद्या
खुद	-	स्वयं
घायल	-	जिसको चोट लगी हो; जख्मी
ज़ुबान	-	നാവ് tongue நாக்கு ನಾಲಿಗೆ
दरकार	-	ज़रूरत ആവശ്യകത necessity தேவை ಅಗತ್ಯ
बयान	-	वर्णन; विवरण; चर्चा
बारीक	-	सूक्ष्म
मुसीबत	-	कष्ट; संकट
मौलिकता	-	തനിമ originality எதார்த்தமான ಸ್ವಂತಿಕೆ
रूढ़ि	-	बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा; रीति
लगातार	-	निरंतर
विख्यात	-	प्रसिद्ध
संवेदना	-	मन में होनेवाला बोध या अनुभव; सहानुभूति
सहज	-	स्वाभाविक
स्थाई	-	വായ്ത്താരി repeated lines in a folk song வாய்ப்பாட்டு ಬಾಯ್ದೆರೆ
हताशा	-	निराशा

टूटा पहिया

अक्षौहिणी	-	**संपूर्ण चतुरंगिणी सेना।**
कुचलना	-	**रौंदना** ചവിട്ടി മെതിക്കുക to trample மிதித்தல் ಕಾಲಿನಿಂದ ಹೊಸಕಿ ಹಾಕು
चुनौती	-	**ललकार** വെല്ലുവിളി challenge சவால்
निहत्थी	-	**शस्त्रहीन** ആയുധമില്ലാത്ത unarmed ஆயுதமில்லாமல் ಆಯುಧವಿಲ್ಲದೆ
पहिया	-	ചക്രം wheel சக்கரம்
फेंकना	-	എറിയുക to throw எறிதல் ಬಿಸಾಡು
लोहा लेना	-	**सामना करना**

अक्षौहिणी सेना :

संपूर्ण चतुरंगिणी सेना। इसमें 109350 पैदल, 65610 घोड़े, 21870 रथ तथा 21870 हाथी रहते हैं।

ब्रह्मास्त्र :

एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र जो मंत्र द्वारा चलाता था; कभी विफल न होनेवाली युक्ति।

NT-255-3-HINDI-10

बंटी

झटक देना	-	हल्का धक्का देना തള്ളിമാറ്റുക, to push aside தள்ளி மாற்றுவது ದೂಡಿಬಿಡು
थपथपाना	-	സ്നേഹത്തോടെ തലോടുക to pat அன்போடு தழுவுதல் ಸಂತೋಷದಿಂದ ಬೆನ್ನುತಟ್ಟು
दुलारा देना	-	ലാളിക്കുക to caress கொஞ்சு ಲಾಲನೆ ಮಾಡು
फरमाइश करना	-	നിർദ്ദേശിക്കുക/ആവശ്യപ്പെടുക, to request/order தேவைப்படுதல் ಆಜ್ಞೆಕೊಡು
फूफी	-	**पिता की बहन**
बुत	-	പ്രതിമ statue, சிலை ವಿಗ್ರಹ
मशवरा	-	सलाह
सटा लेना	-	ചേർത്ത്നിർത്തുക to be in close proximity ஒன்றாக நிறுத்து ಸೇರಿಸು
सलाम ठोंकना	-	സല്യൂട്ട് ചെയ്യുക to salute வணக்கம் செய் ಪ್ರಣಾಮ ಮಾಡು
सलाह	-	उपदेश
सहमना	-	ചൂളുക, പരിഭ്രമിക്കുക to feel fear பதற்றப்படு ಹೆದರಿಸು

इकाई 2

"हर कला प्रकृति की नकल है"

फ़िल्मी लेख

आई एम कलाम के बहाने

मिहिर

गाँव के स्कूल में मेरा एक साथी था– मोरपाल। वही मोरपाल जिसने एक बार हमारे अंग्रेज़ी के मास्टर तिवारी जी को look का मतलब और सही हिज्जे पूछे जाने पर बताया था, "एल डबल ओ के लुक, लुक यानी लुक-लुक के देखना।" नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से क्लास की दरीपट्टी पर हमारी बैठने की जगहें भी साथ ही थीं। वही मोरपाल जिसकी मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखते ही बाँछें खिल जाती थीं। हमारा सौदा था खेल घंटी में खाने की अदला-बदली का। यानी मेरे टिफ़िन के राजमा-चावल उसके और उसके घर से आया बड़ा-सा छाछ का डिब्बा मेरा। उसे पता था कि छाछ मेरी कमज़ोरी है। लेकिन मुझे मोरपाल से मिलने से पहले कतई

'हमारा सौदा था खेल घंटी में खाने की अदला-बदली का।' – इस तरह की अदला-बदली से हम क्या समझ सकते हैं?

अंदाज़ा नहीं था कि मेरे लिए राजमा जैसी सामान्य-सी चीज़ किसी के लिए इतनी खास हो सकती है। मोरपाल ने मेरे टिफ़िन बॉक्स में रखे राजमा को खाने से पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था। वह हमारे स्कूल के पंद्रह किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाता रोज़ स्कूल आता था। मैं आज तक नहीं जान पाया कि कैसे वह उस छाछ के डिब्बे को रोज़ पंद्रह किलोमीटर बिना ज़रा भी छलकाए लिए आता था।

मैं स्कूल जाने में रोया करता। रोज़ नए बहाने बनाया करता और जब तेज़ बारिश के दिनों में स्कूल के रास्ते में पानी भर जाने से छुट्टी हो जाया करती, तो मैं घर पर नाचा करता। लेकिन मैं समझ नहीं पाता था कि मोरपाल (और उसके जैसे मेरे कई और सहपाठी) बिना नागा रोज़ स्कूल क्यों चले आते थे? उनका स्कूल को लेकर प्रेम इतना गहरा था कि रविवार

'रविवार की छुट्टी का दिन उनके लिए हफ़्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता।' ऐसा क्यों कहा गया है?

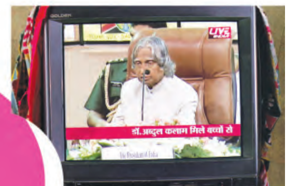

की छुट्टी का दिन उनके लिए हफ़्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता। मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफ़ॉर्म से हमेशा चिढ़ा करता और उसे पहनना हमेशा टाला करता। वहीं मोरपाल मुझे जब भी दिखा, हमेशा वही स्कूल की यूनीफ़ॉर्म पहने ही दिखा। एक बार तो मुझे याद है कि मोहल्ले की किसी शादी में भी उसे वही नीली-खाकी स्कूल यूनीफ़ॉर्म पहने देख मैं हैरान रह गया था।

यह मुझे बहुत बाद में समझ आया कि जिस स्कूल में बिताए समय को मैं अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था, शायद वही मोरपाल के लिए उसके जीवन का सबसे अच्छा समय होता था। घर की कमरतोड़ मेहनत और खेत-मजूरी से इतर दिन का ऐसा एकमात्र समय जब वह बच्चा बना रह सकता था। मेरे लिए स्कूल यूनीफ़ॉर्म बोझ थी। मेरे पास उससे बेहतर कपड़े थे जिन्हें मैंने अपनी पसंद से बड़े शहरों के बड़े बाज़ारों से खरीदा था। लेकिन मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोड़ा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफ़ॉर्म ही थी। स्वाभाविक था कि वह उसे ही शादी में पहनकर आता।

नील माधव पांडा की 'आई एम कलाम' देखते हुए मुझे अपना बचपन बहुत याद आया। क्योंकि यह फ़िल्म भी उन्हीं विलोमों के बारे में बात करती है जिनसे मेरे बचपन के सब किस्से बने हैं। हमारा नायक 'कलाम' चाय की दुकान में काम करता है। उसका सपना है स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति 'कलाम' सा बनना। लेकिन फ़िल्म में एक और बच्चा भी है, ढाणी के राणा का बेटा रणविजय जिसे स्कूल जाना कतई पसंद नहीं। वही स्कूल जो रणविजय को परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है, कलाम को एक अलग जीवन, बेहतर जीवन का सपना दिखाता है। फ़िल्म में इन दोनों बच्चों की पहली मुलाकात के वक्त के संवाद भी बड़े मज़ेदार हैं और खास इशारा भी करते हैं।

कलाम : इतनी सारी किताबें! काए की हैं?

रणविजय : आपको अंग्रेज़ी नहीं आती क्या?

कलाम : तेरे को पेड़ पर चढ़ना आता है?

रणविजय : हमें घोड़े पर चढ़ना आता है? आपको घुड़सवारी आती है?

कलाम : मेरे को ऊँट पर चढ़ना आता है। तेरे को क्या ऊँट की दवा करनी आती है?

इन संवादों के बाद कलाम और रणविजय के बीच घुड़सवारी सीखने और पेड़ पर चढ़ना सिखाने के लेन-देन को लेकर दोस्ती हो जाती है। फ़िल्म के किस्सों में एक यादगार किस्सा चाय की दुकान चलानेवाले के अधूरे एकतरफ़ा प्रेम का भी है और उस लड़के का भी जो सुदूर बीहड़ में बैठा अमिताभ की फ़िल्में देख-देखकर और उनकी नकल करके खुद अमिताभ हो जाना चाहता है।

बस एक फर्क है। फ़िल्म में कलाम दिल्ली भी पहुँचता है और उसे अपनी पसंद के स्कूल जाने का मौका भी मिलता है। लेकिन मेरे बचपन में ऐसा नहीं होता। मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाता है (छुड़वा दिया जाता है) और वह अपने पिता की तरह आज भी वहीं खेत-मजूरी करता है। इसलिए मेरे लिए

'कलाम' की कहानी सौ में एक की कहानी है। हमें बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में हैं।

'बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है।' –लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

फ़िल्म में हमारे नायक का असल नाम 'कलाम' नहीं है। ढाणी पर काम करने वाले और बच्चों की तरह उसे भी सब छोटू कहकर बुलाते हैं। उसकी माँ जैसलमेर के किसी सुदूर देहात से आकर उसे भाटी सा की चाय की थड़ी पर काम करने के लिए छोड़ जाती है। वह अंग्रेज़ी तो क्या हिंदी भी ठीक से नहीं जानती। लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता। वह खुद ही अपना नाम 'कलाम' रख लेता है। इस नाम में उसकी आकांक्षाओं का अक्स है। उसके हाथ की बनाई चाय में जादू है। भाटी सा भी उसकी कलाकारी की वाहवाही करते नहीं थकते। जगह ऐसी है कि विदेशी टूरिस्ट बहुत आते हैं। कलाम सीखने में तेज़ है। झट-से उनकी बोली सीख जाता है और जल्दी ही विदेश से आई लूसी मैडम का भी दिल जीत लेता है। लूसी मैडम वादा करती है कि वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी। दिल्ली में डॉ कलाम हैं, जिनसे मिलकर हमारे कलाम को कुछ कहना है।

'लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता' –इससे आपने क्या समझा?

एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने के लिए कहा जाता है। रणविजय परेशान है क्योंकि उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं। कलाम यह जानता है और झट एक अच्छा-सा भाषण लिख अपने दोस्त रणविजय को दे देता है। रणविजय प्रथम पुरस्कार पाता है। इस बीच राणा सा के कारिंदे कलाम के घर तलाशी लेने आते हैं और वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पा कलाम पर चोरी का आरोप

लगाते हैं। लेकिन कलाम फिर कलाम है। इस झूठे आरोप के सामने भी अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोड़ता। यह जानकर कि राणा कुँवर को उससे की दोस्ती की सज़ा देंगे, वह चोरी का इल्ज़ाम सह जाता है पर उन्हें अपनी दोस्ती के बारे में नहीं बताता। यहीं वह तय करता है कि वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा। और वह अकेला ही निकल पड़ता है। रास्ते में मुश्किलें हैं। लेकिन कथा के अंत में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है।

'लेकिन कलाम फिर कलाम है' –लेखक के इस प्रस्ताव पर चर्चा करें।

लिखें, प्रत्येक पात्र क्या करता था?

मोरपाल	घर से राजमा लाता था।
	राजमा देखते ही खुश होता था।
मिहिर	कीमती कपड़े खरीदता था।
	स्कूल से बहुत दूर रहता था।
	छाछ का डिब्बा लाता था।

संबंध पहचानें, लेख से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

सिनेमा का नाम	....
फ़िल्म निर्देशक	....
फ़िल्म का नायक	....
मिहिर के मित्र का नाम	....
छोटू का मित्र	....
समीक्षा के लेखक	....

संबंध पहचानकर सही मिलान करें।

रोज़ स्कूल जाना	यूनिफॉर्म पहनकर आता था।
शादी में भी मोरपाल	लेखक घर में खुशी मनाता था।
मिहिर का मित्र मोरपाल	मोरपाल को बुरी लगती थी।
रविवार की छुट्टी	मिहिर को पसंद नहीं था।
स्कूल की छुट्टी मिलने पर	रोज़ स्कूल आता था।

यह प्रसंग पढ़ें, मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी लिखें।

'जिस स्कूल में बिताए समय को मैं अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था, शायद वही मोरपाल के लिए उसके जीवन का सबसे अच्छा समय होता था।'

पढ़ें, डायरी लिखें।

वह तय करता है कि वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा। और वह अकेला ही निकल पड़ता है। रास्ते में मुश्किलें हैं। लेकिन कथा के अंत में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है।

फ़िल्म के अंत में छोटू उर्फ कलाम का सपना साकार होता है। अपनी सफलता की बात वह अपनी डायरी में लिखता है। संभावित डायरी लिखें।

‘**हम**’ शब्द सर्वनाम के रूप में जाना जाता है। मगर ‘**हम**’ पूर्व प्रत्यय के रूप में विभिन्न प्रसंगों में विशेष प्रकार का अर्थ पैदा करता है। नीचे दिए आरेख का विश्लेषण करें, ‘**हम**’ से जुड़े अन्य पदों को ढूँढ़ निकालें और रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

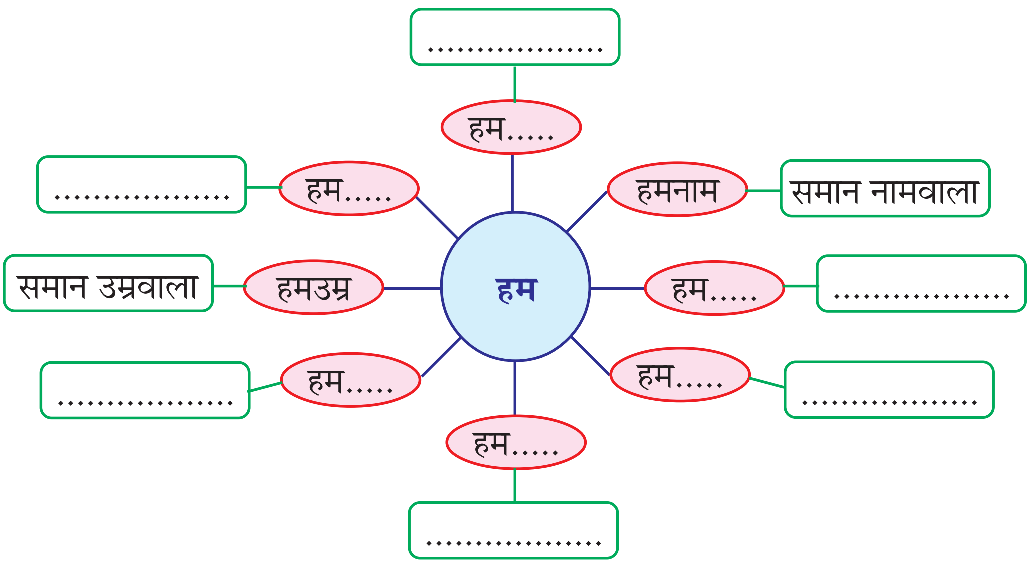

पढ़ें,

- **वह अपनी चिट्ठी कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा।**
- **लूसी मैडम वादा करती हैं कि वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी।**

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

चर्चा करें,

- रेखांकित शब्द क्रिया के किस समय के होने की सूचना देते हैं?
- इन वाक्यों में क्रिया की अन्विति किन शब्दों से है?

■ पढ़ें,

- मैं स्कूल जाने में रोया करता।
- पानी भर जाने से छुट्टी हो जाया करती।

क्रिया रूपों की विशेषता पर चर्चा करें।

रेखांकित क्रिया रूपों से क्रिया के होने से संबंधित कौन-सा आशय मिलता है?

■ इस प्रकार के अन्य वाक्य चुनकर लिखें।

-
-
-
-
-
-

मिहिर पांडेय

जन्म : 2 सितंबर 1985, उदयपुर

आपका बचपन 'बनस्थली विद्‍यापीठ' में बीता। आपने दिल्ली विश्वविद्‍यालय से एम.ए, एम.फिल, पीएच.डी आदि की उपाधियाँ लीं। आप लोकप्रिय सिनेमा के अध्येता हैं। आपने नवभारत टाइम्स, तहलका और कथादेश के लिए हिंदी सिनिमा पर कॉलम लिखे। कई पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख और निबंध प्रकाशित हैं। आप सिनेमा पर 'आवारा हूँ' ब्लॉग का संचालन करते हैं।

मुझे बारिश में चलना पसंद है, मेरे आँसू जो नहीं देख पाता है कोई!

चैप्लिन

4HAHRS

सबसे बड़ा शो मैन

गीत चतुर्वेदी

गाते-गाते अचानक माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में तब्दील हो गई। लोगों को लगा कि माइक में कुछ ख़राबी आ गई है, पर फुसफुसाहट ज़ारी थी। लोग चिल्लाने लगे। कहीं से कुछ लोग म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ निकालने लगे। इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मज़बूर कर दिया।

'इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मज़बूर कर दिया।'--उस समय माँ की हालत कैसी होगी?

चार्ली को वह अक्सर अपने साथ थिएटर ले जाती थी। उस दिन भी परदे के पीछे खड़ा वह आवाज़ के तमाशे को देख रहा था। माँ और मैनेजर में बहस होते देख वह वहाँ गया। मैनेजर ने चार्ली को माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते देखा था और वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा। माँ डर गई। पाँच साल का बच्चा इस उग्र भीड़ को झेल पाएगा!

बहुत मुबाहिसा के बाद वह अंततः चार्ली को स्टेज पर ले गया और बचाव के कुछ शब्द कह उसे अकेला छोड़ आया। धुएँ के उड़ते हुए छल्लों के बीच चार्ली ने मशहूर गीत *जैक जोन्स* गाना शुरू किया। कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे और वह जैसे ही मिली, गाना सजने लगा।

पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा?

गाना अभी आधा ही हुआ था कि स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई। चार्ली ने गाना रोक दिया और घोषणा की कि पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा। इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया। तब

तक मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा। चार्ली को लगा कि मैनेजर खुद पैसे रख लेना चाहता है। उसने यह बात शिकायती लहजे में दर्शकों से कह दी - हँसी तब और बढ़ गई जब रूमाल की पोटली में पैसे बांध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे चार्ली व्याकुलता से लग गया। जब तक मैनेजर ने वह पोटली माँ के हवाले नहीं की, वह नहीं लौटा।

'इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया'- क्यों?

चार्ली ने जनता में गुदगुदी फैला दी थी। उसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी। मासूमियत में उसने थोड़ी देर पहले फटी माँ की आवाज़ और उसके फुसफुसाने की भी नकल उतार दी। लोगों में ठहाकों की हिस्सेदारी हुई और स्टेज पर जमकर पैसे बरसे। अंत में माँ जब उसे लेने आई तो दर्शकों ने देर तक खड़े होकर तालियाँ बजाई। कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर उसके छोटे बच्चे की तारीफ़ की। चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आख़िरी बार...

दुनिया के सबसे बड़े शो मैन का यह पहला शो था।

उसने जन्म ले लिया था।

'उसने जन्म ले लिया था।'

इसका क्या मतलब है?

‘दुनिया के सबसे बड़े शो मैन का यह पहला शो था।’
इस घटना पर एक रपट तैयार करें।

ध्यान दें

रपट वस्तुनिष्ठ हो।
- रपट क्या, कौन, कब, कैसे, कहाँ आदि प्रश्नों के उत्तर देने लायक हो।
रपट में लेखक का अपना दृष्टिकोण प्रकट हो।
शीर्षक आकर्षक हो।

पढ़ें,

- लोग चिल्लाने लगे।
- कहीं से कुछ लोग म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ निकालने लगे।
- वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा।
- मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा।

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें और पहचानें इन शब्द-रूपों में समानता कहाँ है? चर्चा करें।

अनुबद्ध कार्य

- चार्ली चैप्लिन पर एक विशेषांक निकालें।

चार्ली चैप्लिन

सर चार्लस स्पेनसर चैप्लिन का जन्म 16 अप्रैल1889 को हुआ। चैप्लिन विश्व के बड़े कलाकारों में एक है। वे हास्य अभिनेता, फिल्म निदेशक, संगीतज्ञ, फिल्म निर्माता आदि के रूप में मशहूर थे। अमेरिकी सिनेमा के क्लासिकल हॉलीवूड युग के प्रारंभ से मध्य तक उनका योगदान रहा। एक शिशु कलाकार से लेकर 88 वर्ष की आयु तक वे इस क्षेत्र में सक्रिय थे। 25 दिसंबर 1977 को इस महान कलाकार का निधन हुआ। उनकी मॉडेन टाईमस, दि ग्रैट डिटेक्टर, दि किड, सिटी लाईटस, दि सरकस आदि कई फिल्में विश्व भर के लोग अध्ययन और मनोरंजन के लिए देखते हैं।

गीत चतुर्वेदी

गीत चतुर्वेदी का जन्म 27 नवंबर 1977 को मुंबई में हुआ था। आप कवि हैं, जीवनीकार भी। अब आप 'दैनिक भास्कर' नोएडा के संपादकीय विभाग में कार्यरत हैं।

अनुबद्ध कार्य

चार्ली चैप्लिन की फिल्मों के फेस्टिवैल का आयोजन करें।

अतिरिक्त वाचन के लिए...

फ़िल्मी गीत

नीली आसमानी छतरी...

गुलज़ार

फिल्म	:	*ब्लू अंब्रेल्ला*
संगीत, निदेशक	:	*विशाल भरद्वाज*
निर्माण	:	*रोनी स्क्रू वाला* *विशाल भरद्वाज*

कू कू कू कू ...
कू कू कुड़ी कू कू ...
अरे हे हे रे नीली आसमानी छतरी
कु कू कुड़ी कु कू...
हे हे रे नीली आसमानी छतरी
छतरी का उड़न खटोला, डोले तो लागे हिंडोला
उड़े कभी, भागे कभी, भागे कभी, उड़े कभी
समझ ना मानी छतरी
कू कू कुड़ी कू कू ...

अंबर का टुकड़ा तोड़ा, लकड़ी का हत्ता जोड़ा
हाथ में अपना आसमान है रे
छतरी लेके चलती हूँ, मेमो जैसी लगती हूँ
गोरों का दिल बेईमान है रे
छड़ी कभी, लाठी कभी, लाठी कभी, छड़ी कभी
बड़ी शैतान छतरी
कू कू कुड़ी कू कू...

बारिश से जो रिशता है पानी पे मन खिंचता है
बिजली को ये पहचान है रे
शायद फिर उड़ ना जाए
अंबर से जुड़ना चाहे
भोली है अनजानी है... है... रे...
डूबे कभी, तैरे कभी, गोते खाती जाए कभी
करे नादानी छतरी

कू कू कुड़ी कू कू ...
हे हे रे नीली आसमानी छतरी
छतरी का उड़न खटोला, डोले तो लागे हिंडोला
उड़े कभी, भागे कभी, भागे कभी, उड़े कभी
समझ ना मानी छतरी

दृश्याभास करें।

4HJITF

NT-255-4-HINDI-10

आई एम कलाम के बहाने

अक्स	-	परछाई; चित्र
अदला-बदली	-	लेन-देन; विनिमय
अधूरा	-	अपूर्ण
इतर	-	शेष
इल्ज़ाम	-	आरोप; दोष लगाना
इशारा करना	-	संकेत करना
कतई	-	बिलकुल
कमज़ोरी	-	दुर्बलता
कमर तोड़ मेहनत	-	अत्यधिक परिश्रम
काए की	-	किसकी
कारिंदा	-	सेवक
किस्सा	-	कहानी
खास	-	विशेष; विशिष्ट
घुड़सवारी	-	घोड़े पर सवार करना
चाय की थड़ी	-	चाय की दुकान
चिढ़ना	-	വെറുക്കുക to be displeased வெறு ದ್ವೇಷಿಸು
छलकना	-	തുളുമ്പുക to spill நிறைந்து வழிதல் ತುಳುಕು
छाछ	-	മോര് buttermilk மோர் ಮಜ್ಜಿಗೆ

छूट जाना	-	വിട്ടുപോവുക	to be let go	போய்விடு	ಬಿಟ್ಟುಹೋಗು
जादू	-	വശ്യത; മാന്ത്രികത	magic	கவர்ச்சி, மந்திரத்தன்மை	ಜಾದು
टालना	-	ഒഴിവാക്കുക	to avoid	தவிர்	ಬಿಟ್ಟುಬಿಡು
डिब्बा	-	ചെറിയ പാത്രം	a small box	சிறு பாத்திரம்	ಸಣ್ಣ ಪಾತ್ರೆ
तलाशी लेना	-	പരിശോധിക്കുക	to search	பரிசோதனை செய்	ಹುಡುಕು
दरी पट्टी	-	പരവതാനി	a carpet	கம்பளம்	ನೆಲಹಾಸು
दवा करना	-	**चिकित्सा करना**			
देहात	-	**गाँव**			
नकल करना	-	**अनुकरण करना**			
नागा	-	**गैर हाज़िरी**	ഹാജരാകാതിരിക്കൽ	absence	
परेशान	-	അസ്വസ്ഥനായ	worried	நிலைதடுமாறு	ಅಸ್ವಸ್ಥನಾಗು
फर्क	-	വ്യത്യാസം	difference	வேறுபாடு	ವ್ಯತ್ಯಾಸ
बाँछें खिल जाना	-	**प्रसन्न होना, खुशी से खिल जाना**			
बोझ	-	**भार; वज़न**			
बीहड़	-	**ऊँची-नीची भूमि**			
मंजिल	-	**लक्ष्य स्थान**			
मजूरी	-	**मज़दूरी**			
मज़ेदार	-	രസകരമായ	interesting	சுவையான	ಆಸಕ್ತ
मुलाकात	-	കൂടിക്കാഴ്ച	meeting	பேச்சுவார்த்தை	ಭೇಟಿ
मोहल्ला	-	**इलाका**			

मौका	-	**अवसर**
यादगार	-	**स्मृति-चिह्न**
यानी	-	**अर्थात्**
राजमा	-	**एक किस्म की दाल**
लेन-देन	-	കൊടുക്കൽ വാങ്ങൽ transaction கொடுக்கல் வாங்கல் ವಿನಿಮಯ
वजह	-	**कारण**
वादा करना	-	വാക്കുകൊടുക്കുക to promise உறுதியளித்தல் ಭಾಷೆಕೊಡು
वाहवाही करना	-	**प्रशंसा करना**
विलोम	-	**विपरीत, बेमेल**
सीधे	-	നേരെ straight நேராக ನೇರ
हमनाम	-	**समान नाम का**
हिज्जा	-	**वर्तनी**
हैरान	-	അമ്പരന്നുപോയ astonished ஆச்சரியப்பட்ட ಚಕಿತನಾಗು

ढाणी :

राजस्थान में कुछ ही परिवारों को मिलाकर बने छोटे से गाँव को ढाणी कहते हैं।

भाटी सा; राणा सा :

'**सा**' तो सम्मान के लिए जोड़ा जानेवाला शब्द है। **भाटी** और **राणा** दोनों जातिसूचक उपनाम हैं, जिनका प्रयोग राजस्थान में 'ऊँची जाति' के राजपूत लोगों के लिए किया जाता है।

सबसे बड़ा शो मैन

अभद्र	-	अहित (अशुभ) അശുഭകരമായ indecent நல்லதல்லாத ಅಶುಭ
गुदगुदी	-	उमंग/पुलक/उल्लास
छल्ला	-	ഗോളാകൃതിയിലുള്ള വസ്തു a ring shaped object கோளவடிவம் ಉರುಟಾದ ವಸ್ತು
ज़िद	-	हठ നിർബന്ധം கட்டாயம் ಒತ್ತಾಯವಾಗಿ
झेलना	-	സഹിക്കുക to suffer பொறு ಸಹಿಸು
ठहाका	-	അട്ടഹാസം a loud laugh அட்டகாசம் ಅಟ್ಟಹಾಸ
तब्दील होना	-	परिवर्तित होना, बदलना
तारीफ़ करना	-	प्रशंसा करना
धुन	-	स्वर के आरोह-अवरोह का विशेष ढंग।
फुसफुसाहट	-	मंद स्वर में कहना നേരിയ ശബ്ദത്തിൽ പറയുക whispering மென்மையாகச் சொல்லுதல் ಮೆಲ್ಲಗೆ ಮಾತಾಡು
बहस	-	वाद-विवाद
बौछार	-	वर्षा
मासूमियत	-	നിഷ്കളങ്കത innocence களங்கமற்ற ನಿಷ್ಕಳಂಕ
मुबाहिसा	-	बहस/तर्क-वितर्क
लहजा	-	बोलने का ढंग
हवाला करना	-	കൈവശം കൊടുക്കുക to handover ஒப்படைத்தல் ಮತ್ತೊಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಕೊಡು
हिस्सेदारी	-	പങ്കാളിത്തം sharing பங்களிப்பு ಭಾಗವಹಿಸು

नीली आसमानी छतरी

उड़न खटोला	-	उड़नेवाली खाट
गोता खाना	-	डूबना
नादानी	-	मूर्खता
हत्था	-	मूठ
हिंड़ोला	-	झूला

इकाई 3

हरेक सभी के लिए; सब हरेक के लिए।
सुनें, प्रकृति की पुकार।

कविता

अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

■ **पढ़ें और चर्चा करें,**

- कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
  कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

  चूल्हे का रोना और चक्की का उदास होना- इसका मतलब क्या है?

- कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
  कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

  ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर इशारा करती हैं?

- दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
  धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

  इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहता है ?

■ **कवि ने अकाल का चित्रण किस प्रकार किया है? चर्चा करें,**

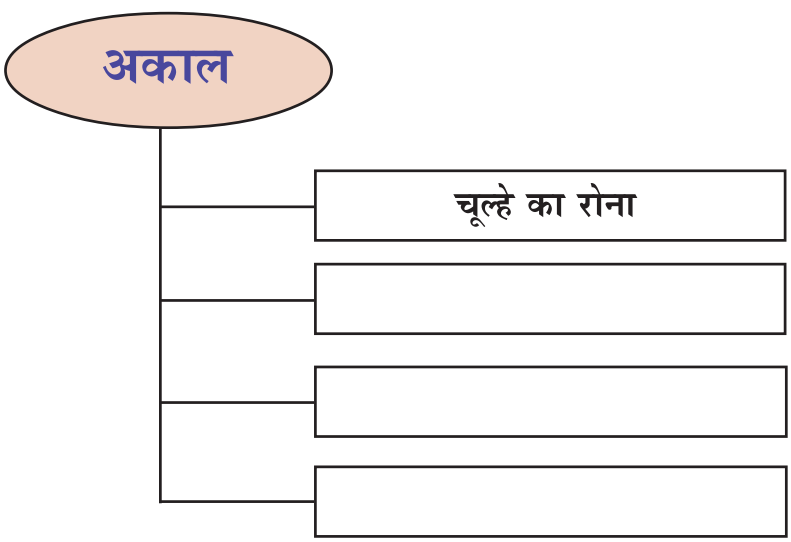

- कवि ने अकाल के बाद की हालत का चित्रण किस प्रकार किया है? चर्चा करें,

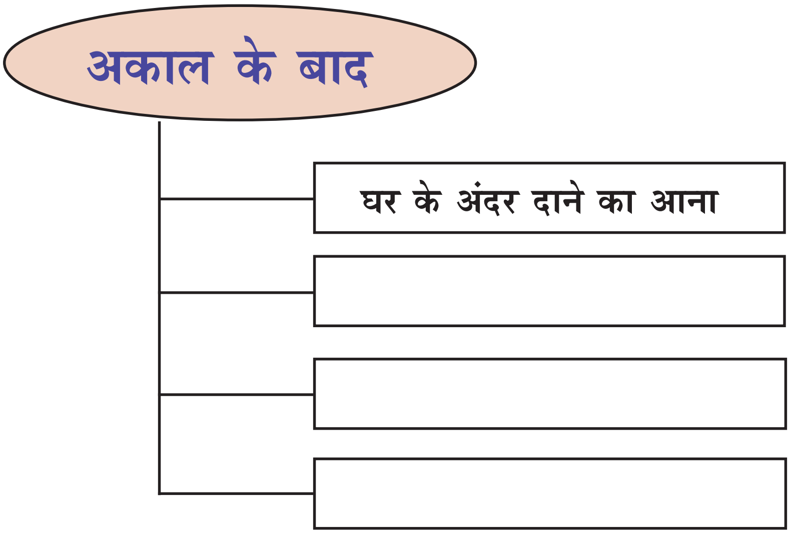

- चर्चा करें,

कविता में 'कई दिनों तक' और 'कई दिनों के बाद' दुहराने का तात्पर्य क्या हो सकता है?

- अकाल के क्या-क्या कारण हो सकते हैं? चर्चा करें।

- **कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें।**

4HTEV3

नागार्जुन

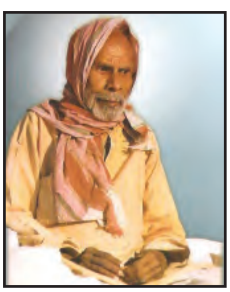

जन्म : 30 जून 1911, बिहार
मृत्यु : 5 नवंबर 1998

आप हिंदी के प्रगतिशील साहित्यकार हैं। आपने हिंदी के अलावा मैथिली, संस्कृत और बंगला में भी रचनाएँ की हैं। लोकजीवन, प्रकृति और समकालीन राजनीति आपकी रचनाओं के मुख्य विषय रहे हैं। 'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखोंवाली', 'तालाब की मछलियाँ' आदि आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

ठाकुर का कुआँ

कहानी

प्रेमचंद

4X3AHQ

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई। गंगी से बोला-यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है!

गंगी प्रतिदिन शाम पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिलकुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। ज़रूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआँ गाँव में है नहीं।

जोखू कई दिन से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला-अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ।

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है?

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी से बीमारी बढ़ जाएगी इतना जानती थी, परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली- "यह पानी कैसे पिओगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।"

'खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी।' -पानी के खराब होने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा- "पानी कहाँ से लाएगी?"

"ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?"

"हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगें, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-मांदे मज़दूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाज़े पर दस-पाँच बेफिक्रे जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दी और साफ़ निकल गए। कितनी अक्लमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नकल ले आए। नाज़िर और मोहतमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता, कोई सौ। यहाँ बेपैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। काम करने का ढंग चाहिए।

मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका।
-इसका क्या मतलब है?

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतज़ार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसीके लिए रोक नहीं, सिर्फ़ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा– हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में ताग डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने हैं, एक-से-एक छंटे हैं। चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी

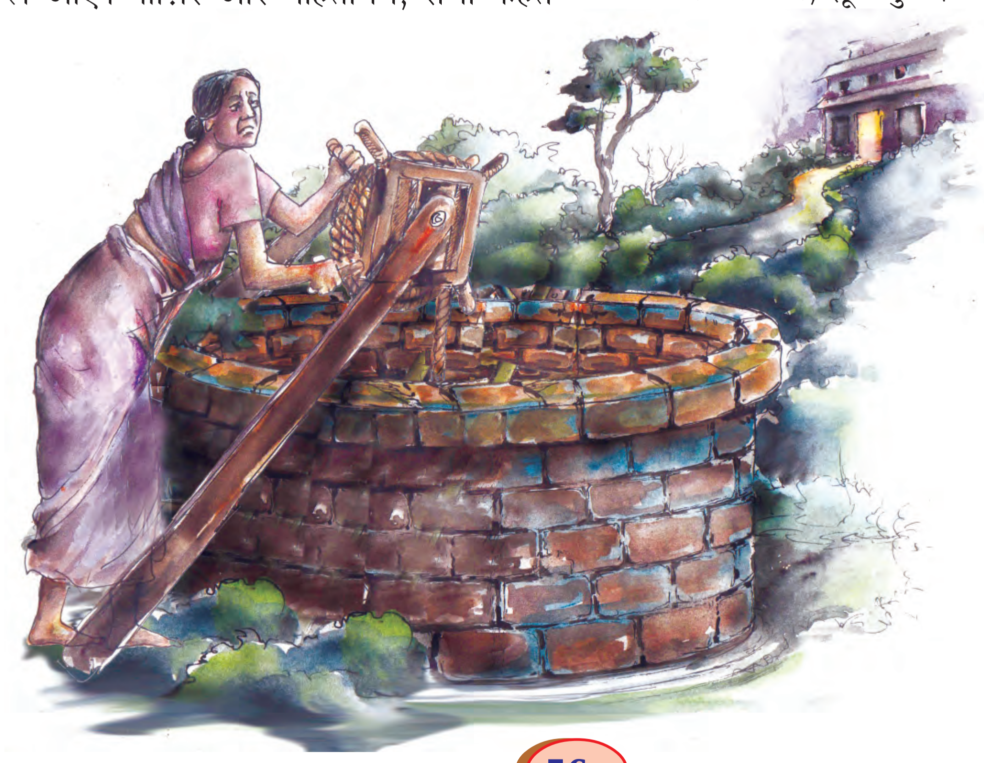

इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिए की भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस-किस बात में हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे। कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं!

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख लें तो गजब हो जाय। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर! बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं?

कुएँ पर स्त्रियाँ पानी भरने आई थीं। इनमें बात हो रही थीं।

'खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताज़ा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।'

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।'

'हाँ, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताज़ा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।'

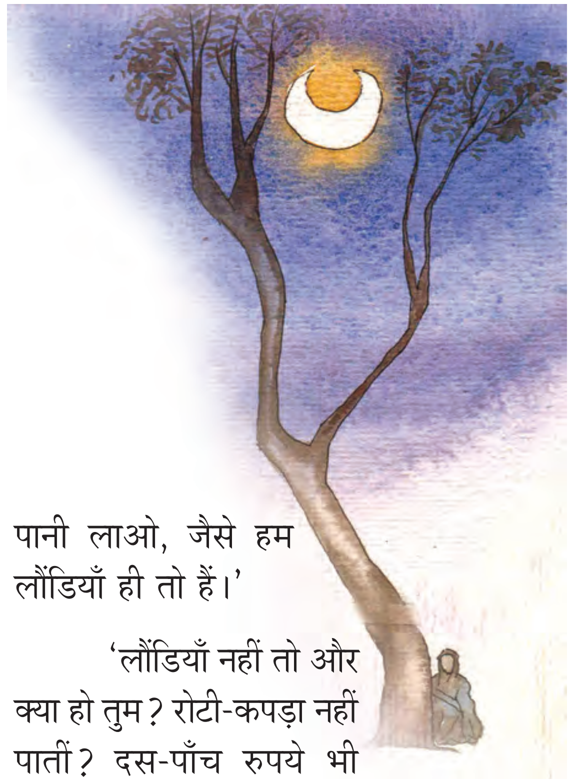

'लौंडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं? दस-पाँच रुपये भी छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौंडियाँ कैसी होती हैं!'

'मत लजाओ, दीदी! छिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता! यहाँ काम करते-करते मर जाओ; पर किसीका मुँह ही सीधा नहीं होता।'

दोनों पानी भरकर चली गईं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ की जगत के पास आई। बेफिक्रे चले गए थे। ठाकुर भी दरवाज़ा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ। अमृत चुरा लाने के

लिए जो राजकुमार किसी ज़माने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया हो। गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था।

'गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था।' गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा?

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दाएँ-बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर उसके लिए माफ़ी या रियायत की रत्ती-भर उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मज़बूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। ज़रा भी आवाज़ न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेज़ी से न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाज़ें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर 'कौन है, कौन है?' पुकारते हुए कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाए वही मैला-गंदा पानी पी रहा है।

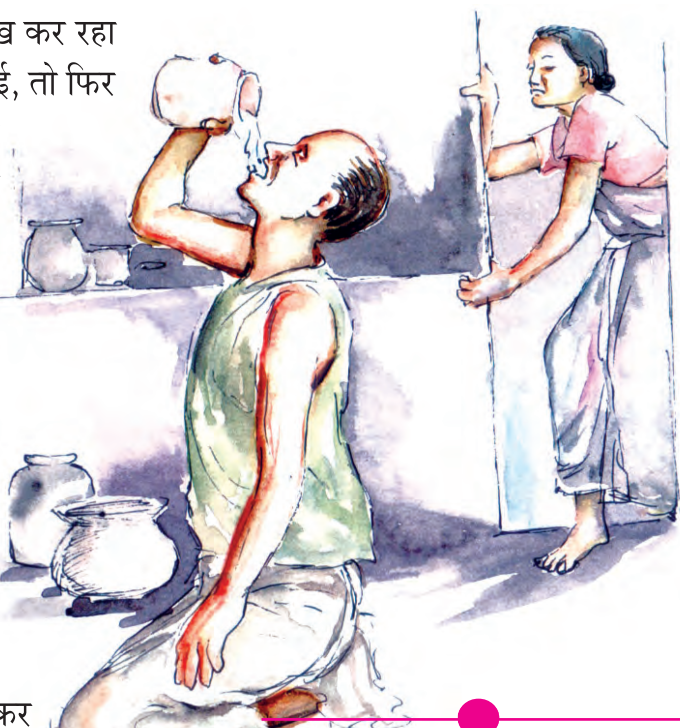

'शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।' यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर के मुँह से क्यों की गई है?

- **ये प्रसंग देखें,**

- गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।
- उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई।
- ठाकुर 'कौन है, कौन है?' पुकारते हुए कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

इन व्यवहारों से गंगी के कौन-कौन से मनोभाव प्रकट होते हैं?

चर्चा करें।

- **गंगी के ये विचार पढ़ें,**

- ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे।
- हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में ताग डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने हैं एक-से-एक छंटे हैं।

इन विचारों में गंगी के कौन-कौन से दृष्टिकोण प्रकट होते हैं?

चर्चा करें।

- **गंगी के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।**

■ **संगोष्ठी चलाएँ।**

‘जाति प्रथा एक अभिशाप है’

-विषय पर आलेख तैयार करें और संगोष्ठी चलाएँ।

4XC6YD

प्रेमचंद

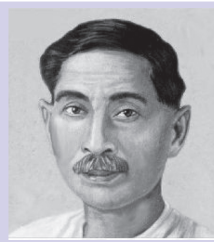

जन्म : 31 जुलाई 1880
निधन : 8 अक्तूबर 1936

आप हिंदी और उर्दू के महान भारतीय लेखकों में से एक हैं। आप एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक तथा कुशल वक्ता थे। आपने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, संपादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य सृष्टि की। उपन्यासों के क्षेत्र में आपके बहुमूल्य योगदान के कारण आप ‘उपन्यास सम्राट’ पुकारे जाते हैं। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि आपके उपन्यास हैं।

कहानी

एक थाल चाँद भरा...

-अनंत गंगोला

वह ठंड का एक दिन था। मैं खेत सिंह के आँगन में बैठा अलाव ताप रहा था। उसके तीनों बच्चे वहीं पास में खेल रहे थे। उन्हें भूख लग रही थी सो बीच-बीच में गाते जाते थे, "माँ खाना दे, माँ खाना दे...।' माँ खेत सिंह के आने की बाट जोह रही थी। वह बोली, "रुक जाओ, तुम्हारे बाबा गट्ठा बेचने शहर गए हैं। वह कुछ लाएँगे, उसीसे खाना बनेगा। घर में कुछ नहीं है।" बच्चे फिर खेल में लग गए। भूख तेज़ लगी तो, "माँ खाना दे, माँ खाना दे..." तेज़-तेज़ और जल्दी-जल्दी गाने लगे। माँ बड़े पसोपेश में थी कि करे तो क्या करे?

बच्चों का ध्यान बँटे यह सोचकर माँ ने कहा, "आँगन में पट्टी बिछाओ और थाली लेकर बैठ जाओ।" माँ की यह तरकीब भी बहुत देर तक काम न आई। अब तक बच्चे अधीर होकर थाली बजाते हुए गाने लगे थे, "माँ खाना दे... माँ खाना दे...।" माँ अंदर गई और सुबह के खाने की हाँड़ी खुरचने लगी। फिर बाहर आकर तीनों थालियों में थोड़ी-थोड़ी खुरचन परोस दी।

तीसरी थाली में लगभग कुछ न था। बच्चा बोला, "माँ दे ना।" माँ बोली, "दिया तो। खा ना।" बच्चा बोला, "क्या खाऊँ? पूरी थाली में तो चंदा चमक रहा है।" माँ रुआँसी हो बोली, "क्या दूँ? तू तो चंदा को ही खा ले।"

माँ झोंपड़ी के पीछे जा रोने लगी। और आसमान में चंदा यह सब देखता रहा।

'खाना' विषय पर प्रदर्शनी चलाएँ।

अनंत गंगोला

भारत में स्कूली शिक्षा को बेहतर, रुचिपूर्ण और सार्थक बनाने में अनंत गंगोला की खास दिलचस्पी रही है। आगरा के इंस्टिट्यूट ऑफ सोशियल साईंसेस से समाज शास्त्र में एम फिल करने के बाद आप पी एच डी के शोध कार्य के लिए मध्य प्रदेश के आदिवासी गाँव नीलगढ़ गए। यहाँ उन्हें जीवन जीने की एक बिलकुल नई दृष्टि मिली। लंबे समय तक उन्हीं के साथ रहकर उन्होंने उनकी शिक्षा, साक्षरता व सामाजिक उत्थान के लिए काम किए।

मदद लें...

अकाल और उसके बाद

अकाल	-	ക്ഷാമം famine வறட்சி
कानी कुतिया	-	ഒറ്റക്കണ്ണുള്ള പെൺപട്ടി one eyed bitch ஒற்றைக்கண்ணுடைய நாய்
खुजलाना	-	ചൊറിയുക to itch சொறிவது
गश्त	-	ഉലാത്തൽ patrol உலவுவது,
चूल्हा	-	അടുപ്പ് hearth அடுப்பு
छिपकली	-	പല്ലി lizard பல்லி,
पाँख	-	पंख
भीत	-	दीवार
शिकस्त	-	पराजय, टूट-फूट

ठाकुर का कुआँ

अक्लमंदी - ബുദ്ധി cleverness புத்திக்கூர்மையுடைய

आहट - കാലൊച്ച light sound of foot steps காலடியோசை ಕಾಲಸಪ್ಪಳ

आहिस्ता - **धीरे-धीरे**

उबालना - തിളപ്പിക്കുക to boil கொதிக்கவை ಕುದಿಸು

एहसान - **आभार** നന്ദി நன்றி ಧನ್ಯವಾದ

कंधा देना - സഹായിക്കുക to help உதவு ಸಹಾಯಮಾಡು

कलसिया - **छोटा कलश** ചെറിയ കുടം சின்னக்குடம் ಸಣ್ಣ ಕೊಡ

कुप्पी - **छोटा दीया** വിളക്ക് அகல் விளக்கு ಚಿಮಿಣಿ

कौड़ी - **पैसा** നാണയം நாணயம் ನಾಣ್ಯ

खराबी - **बुराई**

गजब - **विपदा, बड़ी हानि**

गले में ताग डालना - കഴുത്തിൽ ചരടണിയുക கழுத்தில் நூல் கட்டுவது ಕುತ್ತಿಗೆಗೆ ದಾರ ಹಾಕು

छंटा - **दुष्ट**

जुआ - പണം വച്ചുള്ള ചൂതുകളി - பணம் வைத்து சூதாடுவது ಜೂಜಾಟ

ठाकुर - ക്ഷത്രിയരുടെ ഒരു സ്ഥാനപ്പേര് சத்திரியரின் ஒரு குலப்பெயர் ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಬಿರುದು

तरसना - **बेचैन रहना, लालायित रहना** അതിയായി ആഗ്രഹിക്കുക to desire strongly

ताग - **डोरा** ചരട് Tag சரடு ದಾರ

थके-मांदे - ക്ഷീണിച്ച tired - பலவீனமான ಸುಸ್ತು

दुआर पर झाँकना - പടിക്കലെത്തി നോക്കുക - வாசலில் எட்டிப் பார் ಬಾಗಿಲಿನಿಂದ ಇಣುಕು

धड़ाम - ധഡ് എന്ന ശബ്ദം/വീഴുന്ന ശബ്ദം - திடீர் என்ற சத்தம்/ விழும் சத்தம் ಬೀಳುವ ಶಬ್ದ

धुँधला - മങ്ങിയ dim மங்கலான ಅಸ್ಪಷ್ಟ

नकल - പകർപ്പ് copy பிரதி ನಕಲು

नाजिर - supervisor - பார்வையிடுபவர், கண்காணிப்பவர் ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ

पाबंदी - **बंधन** restriction

फंदा - കുരുക്ക് பொறி ಕುಣಿಕೆ

बदनसीब - ഭാഗ്യഹീനയായ unfortunate துரதிஷ்டவசமான ನತದೃಷ್ಟ

बेगार - **बिना मज़दूरी के कराया जाने वाला काम।** കൂലിയില്ലാത്ത ജോലി கூலியில்லாத வேலை ಸಂಬಳ ಇಲ್ಲದ ಕೆಲಸ

बेफिक्र - ചിന്തയില്ലാത്ത carefree சிந்தனையில்லாமல் ನಿಶ್ಚಿಂತೆ

मजूरी करना - തൊഴിലെടുക്കുക to perform labour வேலை செய் ಕೂಲಿಮಾಡು

मुकदमा - case நிகழ்தல் ಕೇಸ್

मोहतमिम - **प्रबंधक**

रिवाज़ - സമ്പ്രദായം custom நடைமுறை ಸಂಪ್ರದಾಯ

रिश्वत - കൈക്കൂലി bribe லஞ்சம் ಲಂಚ

लहू थूकना - രക്തം തുപ്പുക spitting of blood ரத்தம் வடிந்து ஒழுகுதல் ರಕ್ತಉಗುಳು

लात - पैरों से किसी को मारना

लौंडी - ദാസി a slave girl பணிப்பெண் ದಾಸಿ

शहजोर - अत्यंत बली

सख्त बदबू - तीखी दुर्गंध

सड़ा - मलिन

साँप छाती पर लोटना - വളരെ പരിഭ്രമിക്കുക to be extremely shocked மிகுந்த அதிர்ச்சி ದಿಗ್ಭ್ರಾಂತನಾಗು

साहू - ധനികനായ വ്യാപാരി rich merchant பணக்கார வியாபாரி ಶ್ರೀಮಂತ ವ್ಯಾಪಾರಿ

सुराख - छेद

हाथ-पाँव तुड़वाना - हाथ-पाँव तोडने देना കൈയും കാലും തല്ലിയൊടിപ്പിക്കുക கை, கால், அடித்து நொறுக்குதல் ಕೈಕಾಲು ಮುರಿಯು

हिलकोर - തിര/ഓളം a wave /ripple திரை/அலை ತೆರೆ

एक थाल चाँद भरा

अलाव तापना - ഞെരിപ്പോടിൽ നിന്നും ചൂടേൽക്കുക, bonfire நெருப்போட்டிலிருந்து வெப்பம் ஏற்றல் ಬೆಂಕಿಯಮುಂದೆ ಚಳಿಕಾಯಿಸು

खुरचन - പാത്രത്തിൽ നിന്നും ചുരണ്ടിയെടുത്ത സാധനം scrapings (as of a pot) பாத்திரத்திலிருந்து சுரண்டியெடுத்த பொருள் ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಆಹಾರ ಮುಗಿದಾಗ ಕೆರೆದು ಉಪಯೋಗಿಸಿದ ಆಹಾರ

गट्ठा - തടി, പുല്ല് ഇവയുടെ കെട്ട് A load of wood or grass தடி, புல் இவற்றின் கட்டு ಬೈಹುಲ್ಲು, ಸೌದೆಯ ಕಟ್ಟು

तरकीब	-	उपाय ഉപായം means for achieving an end வழி ಉಪಾಯ
पसोपेश	-	दुविधा ശങ്ക dilemma சந்தேகம் ಸಂಶಯ
बाट जोहना	-	കാത്തിരിക്കുക to await anxiously காத்திருத்தல் ಕಾಯು
हाँड़ी खुरचना	-	മൺകലം ചുരണ്ടുക to scrape an earthen pot மண்பாத்திரம் சுரண்டு ಪಾತ್ರೆಯನ್ನು ಕೆರೆಯು

इकाई 4

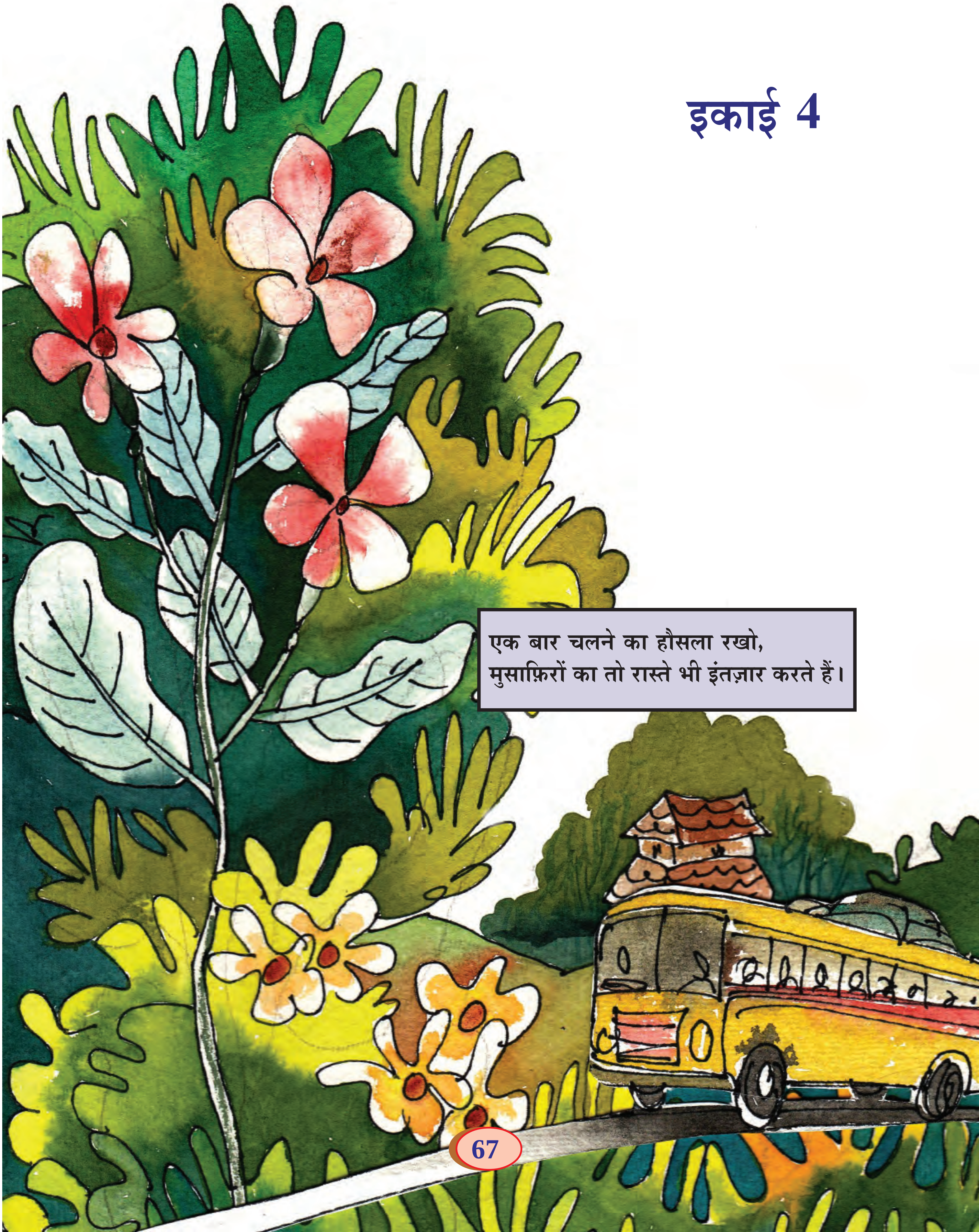

एक बार चलने का हौसला रखो,
मुसाफ़िरों का तो रास्ते भी इंतज़ार करते हैं।

लेख

बसंत मेरे गाँव का

मुकेश नौटियाल

4XL311

मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है। दादी कहती थीं कि जेठ तक सूरज हर सुबह बालिश्त भर छलाँग मारता है। पंचाचूली से चौखंभा तक पहुँचने में सूरज को पूरे चार महीने का समय लग जाता है।

पंचाचूली की पाँच बर्फ़ानी चोटियों और चौखंभा के चार शिखरों के ऐन बीच में जो पहाड़ नज़र आ रहा है वह नंदा पर्वत है। सूरज पंचाचूली से खिसककर जब नंदा पर्वत तक पहुँचता है तो पहाड़ों में फ्योंली के पीले फूल खिलने लगते हैं। पहाड़ी ढलानों पर खूबसूरती से कटे सीढ़ीनुमा खेतों में गेहूँ की हरियाली के बीच सरसों की पीलाई पसर जाती है। बसंत बौराने लगता है।

बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है। देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं। इन फूलों को रिंगाल (बाँस की एक प्रजाति) से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है। टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है ताकि वे सुबह तक मुरझा न पाएँ। सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं। जिनके घरों में फूल सजाए जाते हैं वे बच्चों को चावल, गुड़, दाल आदि देते हैं। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है। फूलदेई की विदाई के साथ बसंत का यह उत्सव समाप्त हो जाता है। अंतिम दिन इकट्ठी की गई सामग्री

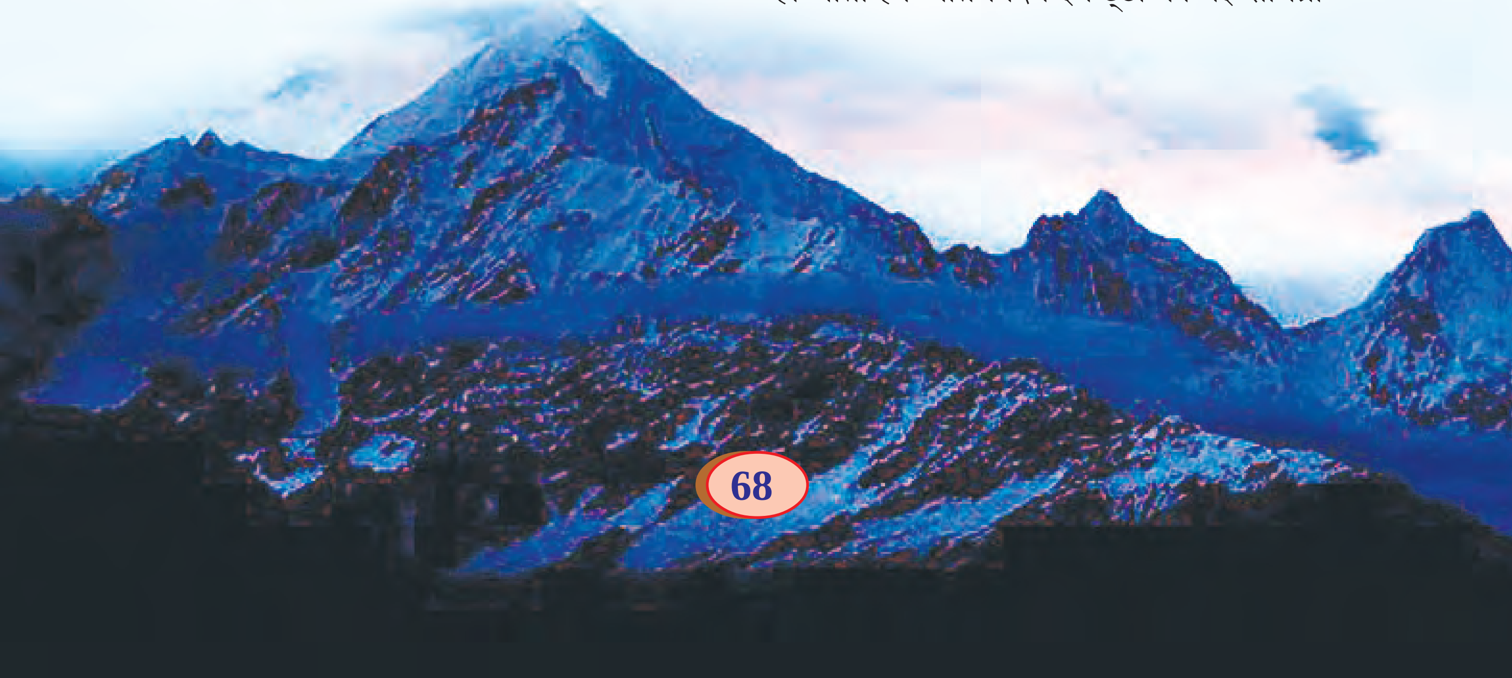

से सामूहिक भोज बनाया जाता है। इस आयोजन में बड़ों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है। बाकी सारे काम बच्चे करते हैं। उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई से बड़ा बच्चों का कोई दूसरा त्योहार नहीं है।

उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों का सबसे बड़ा त्योहार मानते हैं। क्यों?

उधर बच्चे फूलदेई के जश्न में शामिल होते हैं और इधर बड़े ढोल-ढमाऊ की थाप पर चैती गीत गाते हैं। इन गीतों में पांडवों की हिमालय यात्रा के किस्से होते हैं और पहाड़ के वीरों की शौर्य गाथाएँ भी शामिल होती हैं। परंपरागत रूप से चैती गीत गानेवाले औजी जब गाँव में धमकते हैं तो वहाँ भीड़ जम जाती है। बसंत में संगीत के सुर घुल जाते हैं।

बसंत की गुनगुनी धूप जब दोपहरी में तपाने लगती है तब ऊँचे हिमालय शिखरों पर बुराँस चटकने लगते हैं। बुराँस के फूल पहाड़ों पर शानदार लालिमा बिछा देते हैं। मकर संक्रांति से तपता सूरज अब नंदा पर्वत से चौखंभा पर्वत की ओर बढ़ने लगता है। गंगा में पानी की धारा तेज़ हो जाती है। ठंड के मौसम में बर्फ़ीले इलाकों से निचले इलाकों में उतरे पशुचारक वापस घरों को लौटने लगते हैं। महीनों तक फैले चरागाहों, घने जंगलों और अनजान बस्तियों में भटकने के बाद अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है। वे गीत गाते हैं, नाचते हैं। पशुचारकों के साथ उनकी भेड़-बकरियाँ, घोड़े-खच्चर और कुत्ते भी होते हैं। रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है। वे जानवरों के साथ-साथ कीड़ाजड़ी, करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी

जड़ी व औषधियाँ भी बेचते हैं। इन गाँवों से इनका सदियों का रिश्ता है, इसीलिए उसी वक्त पूरी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता। बर्फ़ीले मौसम में निचले इलाकों की ओर जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है। मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकड़े कहीं दर्ज़ नहीं होते। आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ यह लेन-देन चल रहा है।

'आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ यह लेन-देन चल रहा है।' यहाँ गाँववालों की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

पशुचारकों के जत्थे जब गुज़र जाते हैं तब गाँव की जड़ में बहती गंगा से सटकर बनी सर्पीली सड़क पर हलचल बढ़ जाती है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की ओर आनेवाले पैदल यात्री धामों के कपाट खुलने से काफ़ी पहले आने लग जाते हैं। सुदूर दक्षिण से आनेवाले महात्मा कई बार हमारे गाँव तक आ जाते हैं। उनके हाथ में एकतारा होता है और उसके संगीत पर वे भजन गाते हैं। बद्रीनाथ और केदारनाथ के मुख्य पुजारी आज भी दक्षिण भारत से नियुक्त होते हैं।

सूरज जब चौखंभा पर्वत के ठीक पीछे से उदय होने लगता है तब जेठ शरू हो जाता है। पहाड़ की सड़कें गाड़ियों से भर जाती हैं। अपने घर की छत से जब मैं बद्रीनाथ यात्रा-मार्ग की भीड़ देखता हूँ तो भूल जाता हूँ कि महज दो महीने पहले यह घाटी एकदम शांत थी।

सदियों से यह ऋतु-चक्र यूँ ही चलता आ रहा है। हिमालय अपनी जगह मौजूद है और सूरज मुस्तैदी से अपनी यात्रा कर रहा है। पंचाचूली की पाँच चोटियों की ओर से जब सूरज प्रकट होता है तब मेरे गाँव में हाड़कँपा देनेवाली ठंड पड़ती है। सूरज जब चौखंभा के शिखर से उगता है तब जेठ की गर्मी चरम पर होती है। इन दोनों पर्वतों के बीच खड़े नंदा पर्वत के आसपास सूरज की उपस्थिति मेरे गाँव में बसंत के बौराने का प्रतीक है।

दादी कहती थीं- जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।

'जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।' इसका क्या तात्पर्य है?

प्रकृति वर्णन से युक्त वाक्य लेख से चुनकर लिखें। जैसे,

- मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ खिसकना शुरू कर देता है।
- बसंत की गुनगुनी धूप जब दोपहरी में तपाने लगती है तब ऊँचे हिमालय शिखरों पर बुराँस चटकने लगते हैं।

रेखांकित अंशों पर ध्यान दें, और उनका विशेष अर्थ समझें।
पाठभाग से ऐसे वाक्यों का चयन करें।

प्रदत्त कार्य

मौसम के आधार पर भारत की सामाजिक गतिविधियाँ बदलती रहती हैं। यहाँ की ऋतुओं की बातें तो बिलकुल अनोखी हैं। हर ऋतु के साथ कई त्योहार भी जुड़े हुए हैं। सोचें और इस तालिका की पूर्ति करें:

ऋतु	महीना			मुख्य गतिविधियाँ	मुख्य त्योहार
	ईसाई वर्ष	शक वर्ष	हिज़रा वर्ष	(खेती, फसल आदि)	

उपरोक्त तालिका के आधार पर मौसम और त्योहार विषय पर निबंध तैयार करें।

- प्रकृति सौंदर्य और पर्यावरण प्रदूषण पर आधारित वृत्त चित्र देखें।
  मनुष्य और प्रकृति के आपसी संबंध पर चर्चा करें।
  उपर्युक्त विषय पर पोस्टर तैयार करें।

- ये वाक्य पढ़ें,

  - बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है।
  - देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं।
  - सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं।

  रेखांकित शब्द क्रिया के किस समय को सूचित करते हैं?
  चर्चा करें।

- ऐसे अन्य वाक्य लिखें।

  -
  -
  -
  -
  -
  -

यह वाक्य पढ़ें,

इन फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है।

- यहाँ फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में किसके द्‌वारा रखा जाता है?

अब यह वाक्य पढ़ें,

बच्चे इन फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में रखते हैं।

इन दोनों वाक्यों पर चर्चा करें।

इस प्रकार के अन्य वाक्य ढूँढ़कर लिखें।

चर्चा करें :

हिमालयी अंचल के लोग प्रकृति से तालमेल रखकर जीवन बिताते हैं। यदि हम प्रकृति के साथ विनाशकारी हस्तक्षेप करें तो क्या-क्या मुसीबतें होंगी?

मुकेश नौटियाल

जन्म : 4 जुलाई 1971, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड

आप उत्तराखंड भाषा संस्था के सदस्य होने के साथ-साथ साहित्यिक पत्रिका, लोक गंगा आदि के सहायक संपादक भी हैं। आपकी कहानियों का संकलन 'चमकता रहेगा स्वीली गम' के नाम से प्रकाशित हुआ है। हिमालय की कहानियाँ आपका बालकथा-संग्रह है।

यात्रा वृत्त

दिशाहीन दिशा

मोहन राकेश

घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप-रेखा नहीं थी। बस एक अस्थिरता ही थी जो मुझे अंदर से धकेल रही थी। समुद्र-तट के प्रति मन में एक ऐसा आकर्षण था कि मेरी यात्रा की कल्पना में समुद्र का विस्तार अनायास ही आ जाता था। बहुत बार सोचा था कि कभी समुद्र-तट के साथ-साथ एक लंबी यात्रा करूँगा, परंतु यात्रा के लिए समय और साधन साथ-साथ मेरे पास कभी नहीं रहते थे। उन दिनों नौकरी छोड़ दी थी और पास में कुछ पैसे भी थे। इसलिए मैंने तुरंत चल देने का निश्चय कर लिया। पहले सोचा कि सीधे कन्याकुमारी चला जाऊँ और वहाँ से रेल, मोटर या नाव, जहाँ जो मिले, उसमें पश्चिमी समुद्र-तट के साथ-साथ गोआ या बंबई तक की यात्रा करूँ। रास्ते में जहाँ मन हुआ, वहीं कुछ दिन रह जाऊँगा। शिमला में हमारे स्कूल में कई लोग दक्षिण भारत के थे। उनमें से एक ने कहा था कि रहने के लिए कण्णूर बहुत अच्छी जगह है। एक और का कहना था कि मैं एक बार कोल्लम पहुँच जाऊँ, तो वहाँ से और कहीं जाने को मेरा मन नहीं होगा। दिल्ली में एक मित्र ने कहा था कि पश्चिमी समुद्र-तट पर गोआ से सुंदर दूसरी जगह नहीं है। वहाँ खुला समुद्र-तट है, एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है और सबसे बड़ी बात यह है कि जीवन बहुत सस्ता है– रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोड़े पैसों में प्राप्त हो सकती है। मेरे लिए सभी जगहें अपरिचित थीं, इसलिए मुझे सभी में आकर्षण लग रहा था। कोचिन, कण्णूर, मंगलूर, गोआ। अलेप्पी के बैक वाटर्ज़ और नीलगिरि की पहाड़ियाँ। सबके प्रति मेरे मन में एक-सी आत्मीयता जागती थी। जैसे कि मेरा उन सब स्थानों से कभी का घनिष्ठ संबंध रहा हो।

"घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप-रेखा नहीं थी।" –लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप-रेखा बनाना ज़रूरी है?

सबसे अधिक आत्मीयता कन्याकुमारी के तट को लेकर महसूस होती थी। परंतु एक घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए व्यक्ति के लिए उस विस्तार के प्रति ऐसी आत्मीयता का अनुभव करने का आधार क्या हो सकता था? केवल विपरीत का आकर्षण?

घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के विशाल समुद्र-तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है?

घर से चलते समय कुछ निश्चय नहीं था कि कब, कहाँ, कितने दिन रहूँगा। हाँ, चलने तक इतना निश्चय कर लिया था कि पहले सीधे कन्याकुमारी न जाकर बंबई होता हुआ गोआ चला जाऊँगा और वहाँ से कन्याकुमारी की ओर यात्रा प्रारंभ करूँगा। यह इसलिए चाहता था कि मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव कन्याकुमारी हो...।

******

दिसंबर सन् बावन की पच्चीस तारीख। थर्ड क्लास के डिब्बे में ऊपर की सीट बिस्तर बिछाने को मिल जाए, वह बड़ी बात होती है। मुझे ऊपर की सीट मिल गई थी। सोच रहा था कि अब बंबई तक की यात्रा में कोई असुविधा नहीं होगी। रात को ठीक से सो सकूँगा। मगर रात आई, तो मैं वहाँ सोने की जगह भोपाल ताल की एक नाव में लेटा बूढ़े मल्लाह अब्दुल जब्बार से गज़लें सुन रहा था।

भोपाल स्टेशन पर मेरा मित्र अविनाश, जो वहाँ से निकलने वाले एक हिंदी दैनिक का संपादन करता था, मुझसे मिलने के लिए आया था। मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर

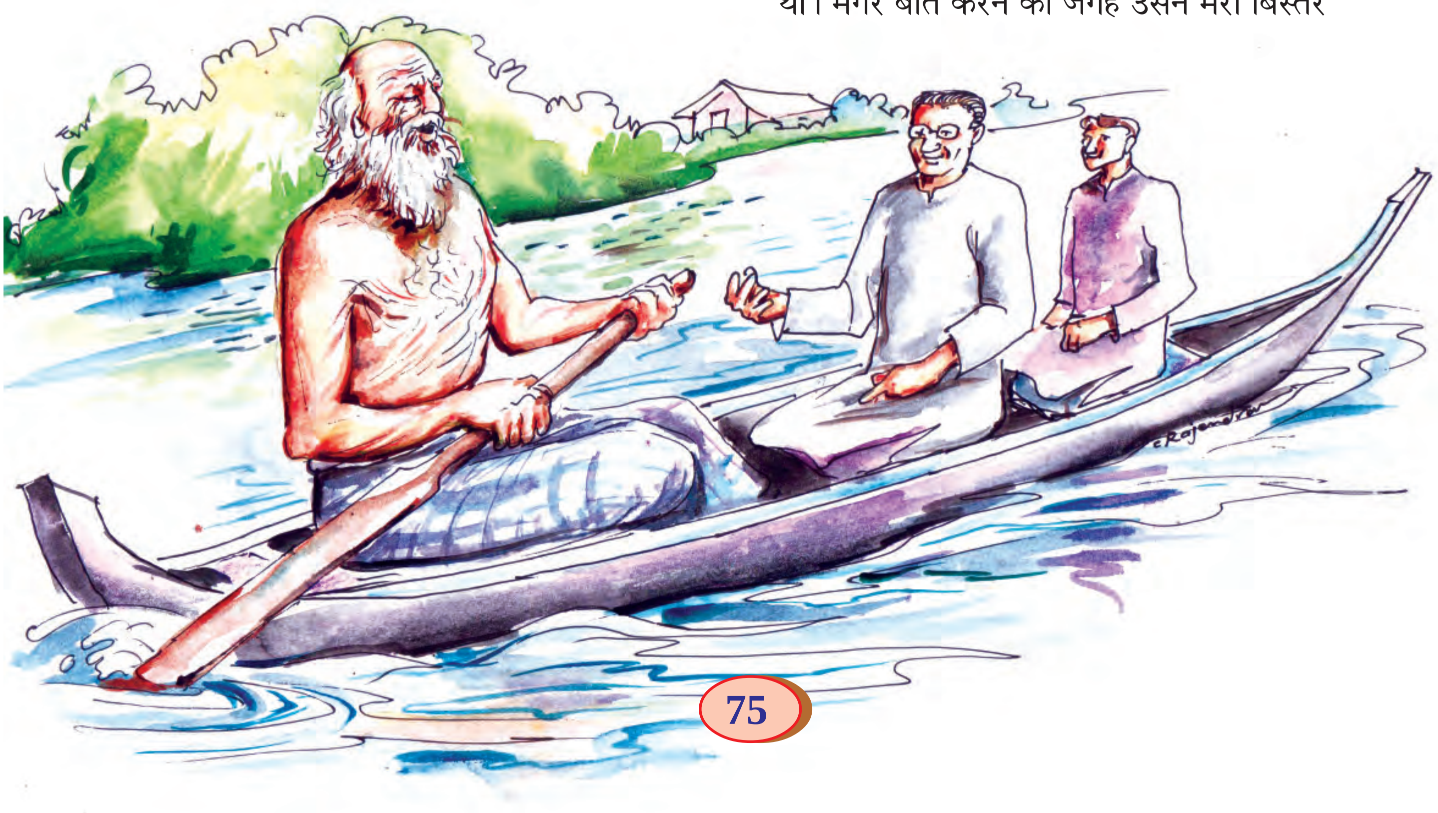

लपेटकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया। इस तरह मुझे एक रात के लिए वहाँ रह जाना पड़ा।

'मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया।' अविनाश के इस आचरण से मोहन राकेश और अविनाश के बीच की मित्रता का क्या अंदाज़ा मिल जाता है?

रात को ग्यारह के बाद हम लोग घूमने निकले। घूमते हुए भोपाल ताल के पास पहुँचे तो मन हो आया कि नाव लेकर कुछ देर झील की सैर की जाए। नाव ठीक की गई और कुछ ही देर में हम झील के उस भाग में पहुँच गए जहाँ से चारों ओर के किनारे दूर नज़र आते थे। वहाँ आकर अविनाश के मन में न जाने क्या भावुकता जाग आई कि उसने एक नज़र पानी पर डाली, एक दूर के किनारों पर, और पूर्णता चाहने वाले कलाकार की तरह कहा कि कितना अच्छा होता अगर इस वक्त हममें से कोई कुछ गा सकता।

"मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर" -बूढ़ा मल्लाह हाथ जोड़कर बोला। "मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, और माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं।"

'मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ।' इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है?

"ज़रूर ज़रूर !" हमने उत्साह के साथ उसके प्रस्ताव का स्वागत किया। बूढ़े मल्लाह ने एक गज़ल छेड़ दी। उसका गला काफ़ी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। काफ़ी देर चप्पुओं को छोड़े वह झूम-झूमकर गज़लें सुनाता रहा। एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी। मैं नाव में लेटा उसकी तरफ़ देख रहा था। उस सर्दी में भी वह सिर्फ एक तहमद लगाए था। गले में बनीयान तक नहीं थी। उसकी दाढ़ी के ही नहीं छाती के भी बाल सफ़ेद हो चुके थे। जब वह चप्पू चलाने लगता तो उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलतीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो।

तीसरी गज़ल सुनाकर वह खामोश हो गया। उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया।

'उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया।' -इससे आपने क्या समझा ?

रात, सर्दी और नाव का हिलना, इन सबका अनुभव पहले नहीं हो रहा था, अब होने लगा। झील का विस्तार भी जैसे उतनी देर के लिए सिमट गया था, अब खुल गया।

"अब लौट चलें साहब", कुछ देर बाद उसने कहा, "सर्दी बढ़ रही है और मैं अपनी चादर साथ नहीं लाया।"

अविनाश ने झट से अपना कोट उतारकर उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। कहा, "लो, तुम यह पहन लो। अभी हम लौटकर नहीं चलेंगे। तुम्हें कोई गालिब की चीज़ याद हो, तो सुनाओ।"

बूढ़े मल्लाह ने एतराज नहीं किया। चुपचाप अविनाश का कोट पहन लिया और गालिब की एक गज़ल सुनाने लगा– "मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किए हुए...।"

मुंबई से कन्याकुमारी के बीच के मुख्य समुद्र तटों की सूची तैयार करें।

537C7R

संबंध पहचानें, सही मिलान करें।

मोहन राकेश की बड़ी इच्छा थी	• कि वहाँ जीवन बहुत सस्ता है।
समय और साधन की कमी से	• मोहन राकेश ने यात्रा करने का निश्चय किया।
हाथ में पैसा आने पर	• कि कन्याकुमारी चला जाऊँ।
मोहन राकेश ने पहले सोचा था	• कि समुद्र तट का सफ़र करें।
गोआ इसलिए हम जा सकते हैं	• मोहन राकेश समुद्र तट की यात्रा न कर सके।

पढ़ें, यात्रावृत्त के आधार पर उचित वाक्यों पर सही का निशान ✓लगाएँ।

अब्दुल जब्बार भोपाल ताल में नाव खेता है।	☐
अविनाश एक दैनिक का संपादक है।	☐
मोहन राकेश अपना सूटकेस लिए नीचे उतर गया।	☐
मोहन राकेश अविनाश के साथ सबेरे भोपाल ताल घूमने गया।	☐
अब्दुल जब्बार के गायन में मोहन राकेश और अविनाश लीन हो गए।	☐

पत्र लिखें।

भोपाल ताल में अब्दुल जब्बार और अविनाश के साथ की सैर मोहन राकेश के लिए मज़ेदार थी। वे अपने अविस्मरणीय अनुभव दफ्तर के एक मित्र से बाँटना चाहते हैं। भोपाल ताल की सैर के अनुभवों का ज़िक्र करते हुए मित्र के नाम मोहन राकेश का पत्र लिखें।

पश्चिमी-तट की यात्रा निश्चय ही अवाच्य अनुभूति प्रदान करेगी। गोआ काफ़ी सुंदर जगह है। वहाँ की विशेषताओं को ध्यान में रखकर एक विवरणिका (ब्रॉशर) तैयार करें।

चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

> बूढ़े मल्लाह ने एक गज़ल छेड़ दी। उसका गला काफ़ी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। काफ़ी देर चप्पुओं को छोड़े वह झूम-झूमकर गज़लें सुनाता रहा।

'दिशाहीन दिशा' के अब्दुल जब्बार का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है। ये संकेत पढ़ें और अब्दुल जब्बार के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- गरीब
- परिश्रमी
- खुशमिज़ाज
- सादा जीवन बितानेवाला
- विनयशील
- गज़ल गायक

इन शब्दों पर ध्यान दें :

मुझे	हमने
उसमें	उसकी
इनका	मुझसे
उसने	किसका

इनके मूल शब्दों को पहचानें और परिवर्तन के कारण पर चर्चा करें।

गज़ल सुनें :

मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किए हुए...

53G89E

■ **नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलकर लिखें, अर्थ-भेद भी समझें।**

मैं एक लंबी यात्रा करूँगा।	**मैं एक लंबी यात्रा करूँ।**
....	मैं सीधे कन्याकुमारी चला जाऊँ।
मैं बंबई तक की यात्रा करूँगा।	....
....	मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव कन्याकुमारी हो।
अब हम लौट चलेंगे।	....

■ **मान लें आप दिसंबर की छुट्टियों में दिल्ली जा रहे हैं। इसके लिए क्या-क्या पूर्व तैयारियाँ करेंगे। इस चार्ट की पूर्ति करें :**

53Q4B2

देखने की जगहें	यात्रा की अवधि	यात्रा के साधन	आवश्यक सामग्रियाँ

मोहन राकेश

जन्म : 8 जनवरी 1925, अमृतसर, पंजाब
मृत्यु : 3 जनवरी 1972

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन चुनिंदे साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नई कहानी' आंदोलन का नायक माना जाता है। प्रस्तुत अंश उनका यात्रावृत्तांत 'आखिरी चट्टान तक' से लिया गया है। अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आनेवाला कल (उपन्यास); आषाढ़ का एक दिन, लहरों का राजहंस, आधे अधूरे (नाटक) आदि उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं। 1968 में 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से वे सम्मानित हुए।

जगहों के नाम

कविता

तेज़ी ग्रोवर

जब हम किसी जगह को
नाम में बदल देते हैं
जैसे धूपगढ़
जैसे रजत प्रपात
या फिर हांडी खोह
तो हम अपनी आँखें
बस वहीं के लिए बचाकर चलते हैं

रास्ते में
साल के फूल महकते हैं-
व्यर्थ।
जंगली गिलहरी डगारें फाँदती है-
व्यर्थ।
पक्षी की छाया घास पर उड़ती है-
व्यर्थ।

जंगल-पहाड़ से होते हुए
हम केवल एक नाम तक पहुँचते हैं।

यहाँ कवि ने किसकी ओर इशारा किया है?

धूपगढ़ :
मध्यप्रदेश की सतपुड़ा पर्वतश्रेणी का सर्वोच्च शिखर।

रजत प्रपात :
मध्यप्रदेश के पचमढ़ी का सबसे बड़ा प्रपात।

हांडी खोह :
पचमढ़ी वन-क्षेत्र के अंदर के एक घाटी या दर्रा। इसके चारों ओर ऊँची-नीची चट्टानें हैं।

मदद लें...

बसंत मेरे गाँव का

आंकड़ा	- अंक figure
एकतारा	- एक तार का बाजा
ऐन	- बिलकुल ठीक
खच्चर	- കോവർ കഴുത mule கோவேறு கழுதை ಹೇಸರಗತ್ತೆ
गागर	- घड़ा
चटकना	- फूटना പൊട്ടിവിരിയുക to bloom மலர்தல் ಅರಳು
जत्था	- दल
जश्न	- जलसा, त्यौहार
ढलान	- ढालवाला भूखंड ചരിവ് slope சாய்வு ಇಳಿಜಾರು
थाप	- ध्वनि
दम	- साँस
धामा	- തീർത്ഥ സ്ഥലം holy place புனித இடம் ಪುಣ್ಯಸ್ಥಳ
नकद	- ready cash
पौ फटना	- प्रभात के समय सूर्योदय के सामीप्य के कारण कुछ कुछ उजाला दिखाई पड़ना
बर्फ़ानी चोटी	- बरफ़ से ढका शिखर
बालिश्त	- ഒരു ചാൺ നീളം a span of the extended hand ஒரு சாண் நீளம் ಒಂದು ಇಂಚಿನ ಅಳತೆ
बुराँस	- हिमालय प्रांत का एक विशेष फूल

मकर संक्रांति :

संक्रांति का अर्थ है सूर्य का एक राशि से अलग राशि में संक्रमण या जाना। 'मकर संक्रांति' एक पर्व है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी मकर संक्रांति को मनाया जाता है। वर्तमान शताब्दी में यह त्यौहार अकसर जनवरी महीने के चौदहवाँ या पंद्रहवाँ दिन ही पड़ता है। इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है।

विक्रमीय संवत के महीने

1. चैत्र	2. वैशाख
3. ज्येष्ठ	4. आषाढ़
5. श्रावण	6. भाद्रपद
7. अश्विन	8. कार्तिक
9. मार्गशीर्ष	10. पौष
11. माघ	12. फाल्गुन

चैत :

विक्रमीय संवत का प्रथम महीना है चैत या चैत्र और अंतिम है फाल्गुन। दोनों ही माह वसंत ऋतु में आते हैं। ईसवीं कलैंडर के अनुसार यह मार्च-अप्रैल में है।

जेठ :

जेठ या ज्येष्ठ विक्रमीय संवत का तीसरा माह है। इस महीने में बहुत गर्मी पड़ती है। फाल्गुन महीने में होली के त्योहार के बाद से गर्मी प्रारंभ हो जाती है। चैत्र और वैशाख में अपनी गर्मी दिखाते हुए ज्येष्ठ माह में वह अपने चरम पर होती है। ईसवीं कलैंडर के अनुसार यह मई-जून में है।

कीड़ा-जड़ी एक तरह का जंगली मशरूम है जो एक खास कीड़े की इल्लियों यानी कैटरपिलर्स को मारकर उस पर पनपता है। इस जड़ी का वैज्ञानिक नाम है cordyceps sinensis और जिस कीड़े के कैटरपिलर्स पर ये उगता है उसका नाम है हैपिलस फैब्रिकस। यह हिमालयी श्रेणियों में 14000 फीट की ऊँचाई पर पाया जाता है।

बौराना	- उन्मत्त होना
महज	- सिर्फ़
मुस्तैदी	- तेज़ी
सरसों	- കടുക് mustard கடுகு ಸಾಸಿವೆ
सीढ़ीनुमा खेत	- पहाड़ी ढलानों पर बनाया गया खेत

दिशाहीन दिशा

अंतिम पड़ाव	-	यात्रा का अंतिम ठहराव
अंदाज़	-	ढंग
अर्ज करना	-	पेश करना
आत्मीयता	-	अपनेपन का भाव
एतराज	-	विरोध
कल्पना	-	अनुमान
गज़ल	-	उर्दू की एक पद्यात्मक रचना
गज़ल छेड़ना	-	गज़ल पेश करना
गला	-	आवाज़ (प्रासंगिक अर्थ)
खामोश	-	निशब्द
घना	-	सघन dense
घनिष्ठ	-	आत्मीय
घूमना	-	ചുറ്റിക്കറങ്ങുക to wander சுற்றித்திரிதல் ತಿರುಗು
चंद	-	कुछ
चप्पू	-	पतवार തുഴ an oar துடுப்பு ದೋಣಿಯಹುಟ್ಟು
चादर	-	ओढ़ने का कपड़ा
चुस्त गज़ल	-	बढ़िया गज़ल
झट	-	जल्दी
झील	-	ताल

झूम-झूमकर - तन्मय होकर

तंग - संकरा

तट - किनारा

तरन्नुम - लय के साथ

तहमद - लुंगी

ताल - तालाब

तुरंत - जल्दी

दक्षिण - തെക്ക് south தெற்கு ದಕ್ಷಿಣ

दैनिक - समाचार पत्र

धकेलना - धक्का देना

परंतु - लेकिन

पश्चिम - പടിഞ്ഞാറ് west மேற்கு ಪಶ್ಚಿಮ

फौलाद - पक्का लोहा

बंबई - मुंबई

बढ़ना - वृद्धि होना

बिस्तर बिछाना - लेटना (प्रासंगिक अर्थ)

भावुकता - भावावेश

भोपाल ताल - मध्यप्रदेश के भोपाल शहर में मौजूद बड़ा तालाब इसे भोजताल के नाम से भी जाना जाता है। भोपाल वासियों के लिए यह एकमात्र पीने के पानी का स्रोत है।

मगर	-	लेकिन
मन होना	-	लगना
मल्लाह	-	नाव खेनेवाला
माशा अल्लाह	-	खुदा के अनुग्रह से
मुद्दत हुई है	-	बहुत दिन हुए हैं
मेहमाँ	-	अतिथि
यार	-	दोस्त
रमणीयता	-	सुंदरता
लपेटना	-	बांधना
लेटना	-	കിടക്കുക to lie down கிடத்தல் ಮಲಗು
लौट चलना	-	वापस जाना
विस्तार	-	फैलाव
शायराना	-	कवि के समान
संपादन	-	ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ आदि शुद्ध करके प्रकाशन के योग्य बनाना **editing**
सर्दी	-	जाड़ा തണുപ്പ് coldness குளிர் ತಂಪು
सस्ता	-	कम मूल्य का
साधन	-	सामग्री
सिमटना	-	ചുരുങ്ങുക to shrink சுருங்குதல் ಸಣ್ಣದುಮಾಡು
सीधे	-	നേരെ straight நேராக ನೇರ
सुविधा	-	സൗകര്യം facility வசதி ಸೌಲಭ್ಯ
सैर	-	यात्रा
हुज़ूर	-	मालिक

जगहों के नाम

डगार	-	मार्ग
धूपगढ़	-	**मध्यप्रदेश की सतपुड़ा पर्वतश्रेणी का सर्वोच्च शिखर**
फाँदना	-	कूदकर लाँघना
महकना	-	सुगंधित होना
रजत प्रपात	-	मध्यप्रदेश के पचमढ़ी का सबसे बड़ा प्रपात
रास्ता	-	मार्ग
हांडी खोह	-	पचमढ़ी वन-क्षेत्र के अंदर के एक घाटी या दर्रा। इसके चारों ओर ऊँची-नीची चट्टानें हैं।

इकाई 5

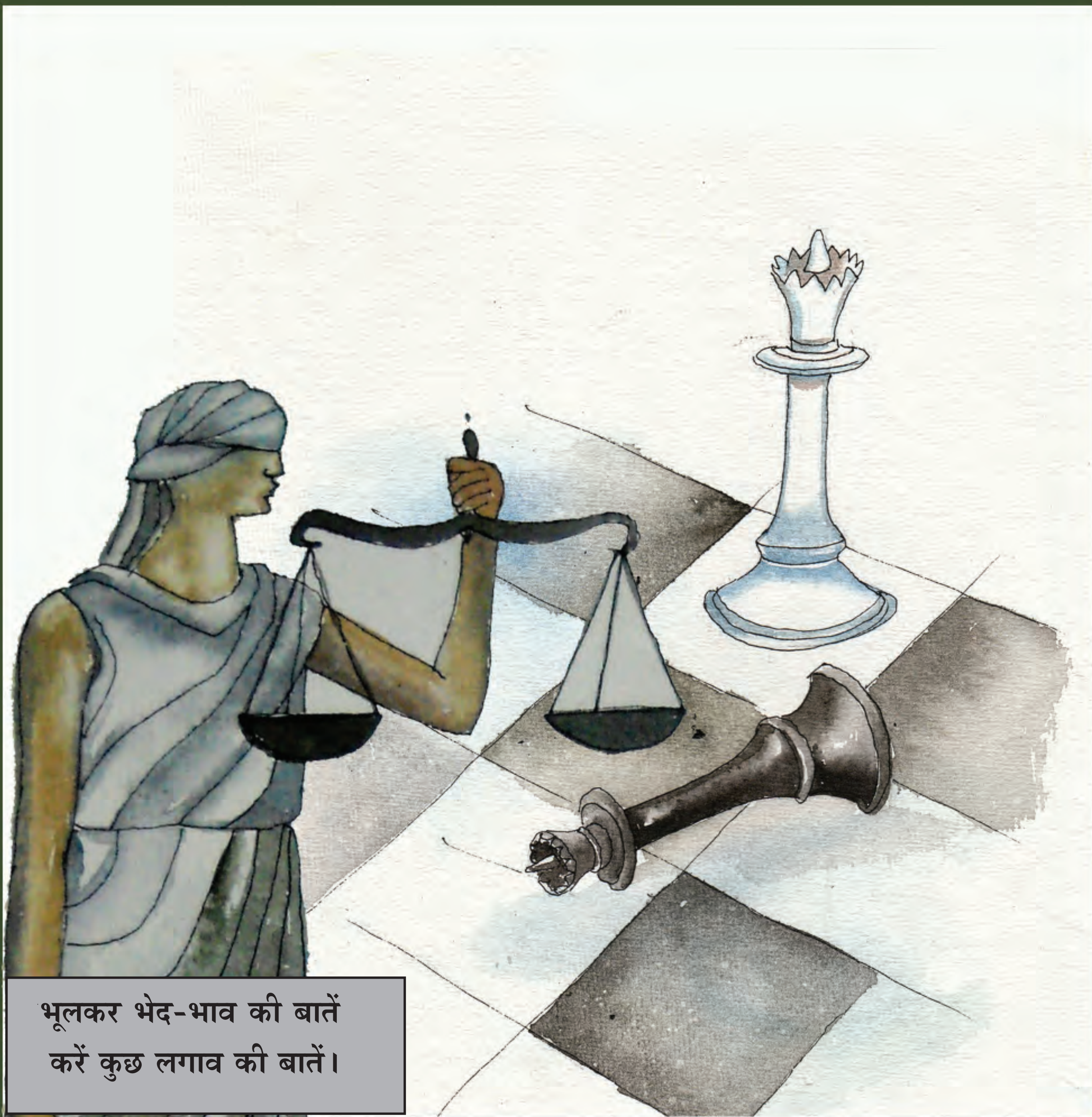

शॉर्ट फ़िल्म '**जून 12**' पर चर्चा करें...

कविता

548VEC

बच्चे काम पर जा रहे हैं

राजेश जोशी

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह
बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

'हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह'
ऐसा क्यों कहा गया है?

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

बातों को सवालों की तरह लिखा जाने से क्या फायदा है?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें

'क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें' -इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं?

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल

पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

यह कविता किस सामाजिक समस्या की चर्चा कर रही है?

■ ये पंक्तियाँ पढ़ें।

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने?

क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को?

इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं? चर्चा करें।

■ नमूने के अनुसार लिखें :

पंक्तियाँ	मतलब
क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें	ऐसे बच्चे खेलने के अवसर से वंचित हैं।
क्या दीमकों ने खा लिया है सारी रंग-बिरंगी किताबों को	....
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें	....

■ कविता की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।

बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे?

लिखें।

____

____

____

____

____

____

____

पोस्टर तैयार करें।

बचपन से वंचित कई बच्चे हैं। उनकी मदद करना हमारी भी ज़िम्मेदारी है। बालश्रम के विरुद्ध एक पोस्टर तैयार करें।

राजेश जोशी

जन्म : 18 जुलाई 1946, नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश

हिंदी के आधुनिक कवियों में प्रमुख। आपकी कविताएँ गहरी सामाजिक सच्चाई की कसौटी हैं। आपके काव्यों में आत्मीयता और गेयता है। मनुष्यता को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष आपकी कविताओं की विशेषता है।

समर गाथा, मिट्टी का चेहरा, दो पंक्तियों के बीच आदि आपके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। 'दो पंक्तियों के बीच' काव्य-संग्रह के लिए आपको साहित्य अकदमी पुरस्कार (2002) प्राप्त हुआ था।

गुठली तो पराई है

कनक शशि

यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं। वैसे बातें अगर खाने की या उनके बचपन की हों तो ठीक है, पर नसीहतें... उफ़ !!

'यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं।' क्यों?

"ऐसा मत करो", "ऐसे पट-पट मत बोलो", "ऐसे धम-धम मत चलो..."। एक दिन गलती से उसने पूछ ही लिया, "क्यों?" तो बस शुरू हो गई, "अरे छोरी, लोग नाम तो तेरी माँ को ही रखेंगे। कहेंगे कुछ सिखाया ही नहीं। ऐसे ही करेगी क्या अपने घर जाकर?

गुठली बोली, "अपना घर? यही तो है मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई।" बुआ हँसके बोली, "अरी

बेवकूफ़ यह घर तो पराया है। बाकी लड़कियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है। ससुराल ही तेरा असली घर होगा। जैसे देख, पैदा तो मैं भी इसी घर में हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है। कुछ समझी?"

'अरी बेवकूफ़ यह घर तो पराया है।' बुआ गुठली से ऐसा क्यों कहती है?

गुठली ठुनक के बोली, "मैं नहीं मानती।" और बाहर चली गई। पीछे से बुआ की आवाज़ सुनाई दी, "चौदह की हो गई पर अकल नहीं आई छोरी को।" माँ बोली, "बचपना है दीदी समझ जाएगी।" माँ को बुआ का साथ देता देख गुठली गुस्से के साथ उदास भी हो गई और सीढ़ियों पर बैठ गई। सोचती रही क्या यह घर उसका नहीं? क्या उसके आम की कैरियाँ वह कभी नहीं खा पाएगी? उसका कुत्ता, नानू भी उसका नहीं? बगीचे में उसकी बनाई क्यारियाँ, मछलियों के लिए तालाब... क्या वे भी उसके नहीं?

इतने में माँ उसे ढूँढ़ती वहीं आ पहुँची। गुठली को उदास देख गले लगाकर बोलीं, "बेटा, बुआ की बात का बुरा मत मान। और जो कल होना है उसे लेकर आज क्यूँ परेशान होना। ये दिन फिर लौट के नहीं आनेवाले हैं इन्हें जी भर के जी ले।" माँ की बातों से गुठली और भी हताश हो गई। लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो। उसे याद आया पिछले साल दीदी की शादी में, सब कितने खुश थे। घर मेहमानों से भरा था। सारे चचेरे-ममेरे भाई-बहन आए हुए थे। गुठली भी कितनी खुश थी-कोई रोक-टोक नहीं बस फुल मस्ती थी। इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए। गुठली बड़ी उत्सुक थी। जैसे-तैसे पूजा-पाठ के बाद कार्ड हाथ में आया तो गुठली का मुँह उतर गया। वह ताऊजी के पास जाकर बोली, "देखिए भइया मेरा नाम कार्ड में छपवाना भूल गया?" ताऊजी बोले, "भूला नहीं है रे... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।" गुठली, "पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे-से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा...।"

लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो। गुठली को ऐसा क्यों लगता है?

"तो क्या हुआ? तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा यहाँ नहीं... अब चल भाग यहाँ से।"

गुठली रोने लगी, तो बुआ ने डाँटा, "क्या शादी के घर में मनहूसियत फैला रही है?" तभी माँ ने अपने हाथ से उसका नाम कार्ड पर लिख दिया। ये अक्षर छपाई जैसे नहीं थे, फिर भी गुठली माँ के प्यार से मान गई।

"पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे-से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा...।" यहाँ कौन-सी सामाजिक अव्यवस्था की झलक मिलती है?

पर अब तो हद हो गई। और गुठली चुप रहने वालों में से नहीं है। वह अपनी दीदी के साथ बिताए मज़ेदार दिनों की याद करने लगी। साथ-साथ कहानियाँ पढ़ना, गाने गाना, चित्र बनाना, मस्ती करना और खूब हँसना। पर शादी के तीन दिन बाद जब दीदी घर आई तो एकदम बदल चुकी थी - न पहले जैसी मस्तीखोर, न बातूनी। अब वह साड़ी पहन सिमटी-सिमटी रहने लगी थी। और तो और जिस भाई को वह "नकटू" कहकर बुलाती थी, उसे अब वह "भइया" कहने लगी थी। हालाँकि शादी तो भइया की भी हुई है, पर वह अब भी अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलता है, खाने में नखरे अब पहले से भी ज़्यादा करने लगा है और वह अभी भी दीदी को "चुहिया" बुलाता है। सब कुछ कितना ऊटपटाँग है। देर रात तक यही सब सोचती रही गुठली। फिर कुछ सोच मुसकराई और सो गई।

सुबह गुठली उठी और समय से काफ़ी पहले ही स्कूल के लिए तैयार हो गई। और खिड़की से बगीचे को निहारने लगी। तभी पाप आए और बोले, "बेटा आज पौधों को पानी नहीं पिलाया क्या?" "नकटू... मतलब भैया से कहो। यह सब उसीका है, तो वही करे... और वैसे भी मैं तो पराया धन हूँ..." गुठली तपाक से बोली।

तभी चौके से ताईजी की आवाज़ आई, "गुठली अपने ताऊजी को चाय दे आ।" गुठली धीरे-धीरे चौके की दहलीज़ तक गई और बोली, "देखिए ताईजी, मैं पराई हूँ यानी मेहमान, मुझसे काम करवाना कुछ अच्छी बात नहीं है।"

ताईजी ने गुठली की तरफ़ देखा और ह..ह कह चाय देने चली गई। माँ गुठली को अभी टिफ़िन पैक करने को बोलने वाली थी पर यह सब सुनकर खुद ही करने लगी। तभी भैया आ गया, "गुठलिया अपने नानू को खाना नहीं दिया?" "देखो भाई साहब, आप कुल दीपक हो, यह घर, यह बगीचा और यह नानू सब आपका ही है, तो बेहतर होगा आप ही इन सबकी देखभाल करें... और वैसे भी मैं तो पराई अमानत हूँ।" सब मुँह बाए गुठली को देखते रहे और गुठली टिफ़िन-बैग उठाकर स्कूल के लिए चल दी।

■ पढ़ें।

- "अरी बेवकूफ़ यह घर तो पराया है। बाकी लड़कियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है। ससुराल ही तेरा असली घर होगा। जैसे देख, पैदा तो मैं भी इसी घर में हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है। कुछ समझी?"
- "भूला नहीं है रे... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।"

ये वाक्य किसकी ओर इशारा करते हैं?

इसपर आपकी राय क्या है?

■ पढ़ें।

गुठली अपने मन की बातें सहेली को बताना चाहती है।

लिखें सहेली के नाम गुठली का पत्र।

■ सामाजिक असमानता के खिलाफ़ गुठली अपने ढंग से आवाज़ उठाती है। असमानताओं के विरुद्ध आप क्या-क्या कर सकते हैं?

कनक शशि

आपने बच्चों के लिए कई कहानियाँ लिखी हैं। मुख्य रूप से आप चित्रकार हैं। आप युनेस्को, एन सी ई आर टी, एकलव्य आदि संस्थाओं से जुड़कर काम करती हैं।

तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है?

कमला भसीन

बाप-बेटी से
पढ़ना है! पढ़ना है! क्यों पढ़ना है?
पढ़ने को बेटे काफ़ी हैं, तुम्हें क्यों पढ़ना है?
बेटी- बाप से
जब पूछा ही तो सुनो
मुझे क्यों पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ
मुझे पढ़ना है
पढ़ने की मुझे मनाही है सो पढ़ना है
मुझमें भी तरुणाई है सो पढ़ना है
सपनों ने ली अँगड़ाई है सो पढ़ना है
कुछ करने की मन में आई है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

मुझे दर-दर नहीं भटकना है सो पढ़ना है
मुझे अपने पाँव चलना है सो पढ़ना है
मुझे अपने डर से लड़ना है सो पढ़ना है
मुझे अपने आप ही गढ़ना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

कई ज़ोर जुल्म से बचना है सो पढ़ना है
कई कानूनों को परखना है सो पढ़ना है
मुझे नए धर्मों को रचना है सो पढ़ना है
मुझे सब कुछ ही तो बदलना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

हर ज्ञानी से बतियाना है सो पढ़ना है
मीरा का गाना गाना है सो पढ़ना है
मुझे अपना राग बनाना है सो पढ़ना है
अनपढ़ का नहीं ज़माना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है...

- **कविता सुनें।**

54HRFZ

मदद लें...

बच्चे काम पर जा रहे हैं

इमारत	- मकान
कोहरा	- कुहरा, धुंध
ढँकना	- ढकना
ढह जाना	- ध्वस्त होना
मदरसा	- विद्यालय
हस्बमामूल	- यथावत्, साधारण

गुठली तो पराई है

यूँ	- इस प्रकार
नसीहत	- सदुपदेश
छोरी	- लड़की
अमानत	- संपत्ति
ससुर	- पति या पत्नी के पिता
बचपना	- सयाने लोगों द्वारा किया गया शिशु-कार्य
हद	- सीमा
मस्ती करना	- मज़ा लेना
बातूनी	- खूब बातें करने वाला
ऊटपटांग	- बिना क्रम के
तपाक	- जल्दी
चौका	- रसोईघर में खाने के लिए तैयार की गई जगह

तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है

काफ़ी	-	बहुत
ज़माना	-	काल, समय
जुल्म	-	अत्याचार, अन्याय
परखना	-	अच्छे-बुरे की पहचान करना
मनाही	-	निषेध

अपनी पहचान

अपनी पहचान

भारत का संविधान

भाग 4 क

नागरिकों का मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य -

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चो/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चो/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग है- 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं-

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक
- उत्तरजीविता का एवं सर्वांगीन विकास का हक
- धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता से बढ़कर आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक
- मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक
- भागीदारी का हक
- बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक
- बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक
- अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक
- उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक
- मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक
- खेलने तथा पढ़ने का हक
- सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक

कुछ दायित्व

- स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।
- स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।
- अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।
- जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं से बढ़कर दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।

Contact Address:

Kerala State Commission for Protection of Child Rights

'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction

Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone : 0471 - 2326603

Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in

Website : www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400

Kerala Police Helpline - 0471 - 3243000/44000/45000

*Online **R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in***